

डॉ. टेड हिल्डेब्रांट, जॉन इलियट, सत्र 1, इंग्लैंड में जन्म, रॉक्सबरी, एमए

© 2024 टेड हिल्डेब्रांट

यह डॉ. टेड हिल्डेब्रांट द्वारा जॉन एलियट, 1604-1690, भारतीयों के प्रेषित पर उनके शिक्षण में है। यह सत्र संख्या एक है, एलियट का महत्व, अंग्रेजी जड़ें, बोस्टन में रॉक्सबरी के प्रथम चर्च के मंत्री।

जॉन एलियट के जीवन और कार्य की इस प्रस्तुति में आपका स्वागत है, जो 1604 और 1690 के बीच रहे।

उनका उपनाम था कि वे भारतीयों के लिए प्रेरित थे। वे अमेरिका के पहले पीढ़ी के पहले बसने वालों में से एक हैं। तो, हम जॉन इलियट के साथ यहाँ शुरुआत में वापस जा रहे हैं।

हम इसे तीन भागों में विभाजित करने जा रहे हैं। पहले भाग में हम मूल रूप से बताएंगे कि हम एलियट के बारे में क्यों लिख रहे हैं, उनका महत्व क्या है और उनके महत्व के क्या परिणाम हुए। और फिर हम इंग्लैंड में उनके जीवन के पहले 27 वर्षों के बारे में बताएंगे।

और फिर हम उसे अमेरिका, बोस्टन, और फिर रॉक्सबरी ले जाएंगे, जहां वह वहां के चर्च में बस गया। और यह उसके जीवन के पहले 39 वर्षों के बारे में है, 27 इंग्लैंड में और फिर अगले 12 साल यहां अमेरिका में। उसके बाद, हम सत्र संख्या दो में जाएंगे।

सत्र संख्या दो में 1646 में वाबोन के विगवाम में उनके विगवाम को शामिल किया जाएगा; यह वह जगह है जहाँ उन्होंने वास्तव में भारतीयों, नैटिक और 14 प्रार्थना करने वाले भारतीय गांवों को शामिल किया, जिन्हें उन्होंने लगभग 1675 तक बनाया था। तो, लगभग 1646 से 1675 तक। और फिर आपके पास किंग फिलिप का युद्ध है।

और हम उस सत्र को किंग फिलिप के युद्ध के साथ समाप्त करेंगे और अगले सत्र, तीसरे सत्र की शुरुआत करेंगे, जो हमारा आखिरी सत्र होगा। हम उस बाइबिल से शुरू कर रहे हैं जिसे उन्होंने लिखा था और उस बाइबिल के साथ बातचीत कर रहे हैं। वह अमेरिका में छपी पहली बाइबिल थी, और उन्होंने बाइबिल का अल्गोंक्विन वम्पानोग भाषा में अनुवाद किया था।

यह अमेरिका में छपी पहली बाइबल थी। हम इस पर नज़र डालेंगे। फिर हम 1675 में किंग फिलिप के युद्ध से लेकर 1690 में उनके जीवन के अंतिम 15 वर्षों तक की कहानी देखेंगे और दिखाएंगे कि किंग फिलिप के युद्ध ने किस तरह से प्रार्थना करने वाले भारतीयों और उनके मिशन को तबाह कर दिया, और 1675 में किंग फिलिप के युद्ध की तबाही के बाद उनके लिए फिर से शुरुआत करना कितना मुश्किल था।

तो, चलिए जॉन इलियट के महत्व से शुरू करते हैं। और मैं जो करना चाहता हूँ वह छह से शुरू करना है। सबसे पहले, इलियट के एक प्रसिद्ध उद्धरण के साथ, आप अविश्वसनीय सपने के बिना अविश्वसनीय चीजें नहीं कर सकते।

आप अविश्वसनीय सपने के बिना अविश्वसनीय चीजें नहीं कर सकते। और इस आदमी ने सचमुच एक सपना देखा था, मैसाचुसेट्स में अल्गोंक्विन जनजाति के मूल भारतीयों की भाषा में बाइबल का अनुवाद करना। और उसने अपना अधिकांश जीवन ऐसा करने में बिताया।

उन्होंने इसे किया और इसे छपवाया। और यह आश्चर्यजनक था कि इस एक व्यक्ति ने कुछ दोस्तों की मदद से क्या किया। तो, सबसे पहले, मैं आपको 14 बीकन स्ट्रीट, बोस्टन पर स्थित कांग्रेसेशनल आर्काइव और लाइब्रेरी की कुछ तस्वीरें दिखाऊंगा, जो कि स्टेट हाउस के ठीक बगल में है, बीकन हिल पर बोस्टन का महान गोल्डन डोम स्टेट हाउस, बीकन स्ट्रीट पर उससे ठीक किटी-कॉर्नर पर, नंबर 14, यह कांग्रेसेशनल आर्काइव और लाइब्रेरी है।

लाइब्रेरी के बाहर, चार बेस-रिलीफ खुदी हुई हैं, और मेरा मानना है कि यह संगमरमर की है। और आपके पास जो है, वह उनमें से एक है मेपलावर कॉम्पैक्ट, जो 1620 में किया गया था, जब विलियम ब्रैडफोर्ड और तीर्थयात्री प्लायमाउथ रॉक और मेपलावर कॉम्पैक्ट पर पहुंचे थे। मेपलावर कॉम्पैक्ट शासितों की सहमति से कानून के शासन का प्रतीक है।

शासितों की सहमति से कानून का शासन। तीर्थयात्रियों, मूल रूप से, यह उनका दस्तावेज़ था, 1620। तो, इसका एक आधार-राहत है, जो अमेरिका की नींव के लिए बहुत महत्वपूर्ण है।

दूसरा, 20 दिसंबर, 1620 को क्लार्क द्वीप पर तीर्थयात्रियों द्वारा सब्बाथ का पालन किया जाना। फिर से, पूजा और विवेक की स्वतंत्रता। और इसे इस बेस-रिलीफ में पत्थर पर दर्शाया गया है।

तीसरा 1636 में हार्वर्ड विश्वविद्यालय की स्थापना है। और इसलिए, एक बेस-रिलीफ है, यह तीसरा है, हार्वर्ड विश्वविद्यालय की स्थापना का बेस-रिलीफ, आज भी एक बड़ी बात है। अंत में, आपको एक और चुनना होगा, मेपलावर कॉम्पैक्ट, हार्वर्ड विश्वविद्यालय की स्थापना, और यह जॉन इलियट द्वारा भारतीयों से बात करना है।

और इसलिए आपके पास जॉन इलियट हैं जो नॉनंटम या सिल्वरलेक/न्यूटन क्षेत्र में मूल भारतीयों को उपदेश दे रहे हैं, जिसे आज हम न्यूटन कहते हैं, 1646 में बस्ती। यह शुरुआती बसने वालों के सामुदायिक साक्ष्य और परोपकार और भारतीयों के पीछे जाने और सुसमाचार फैलाने के उनके जुनून को दर्शाता है। यहाँ हम 14 बीकन स्ट्रीट पर हैं, जहाँ आप कांग्रेसेशनल लाइब्रेरी आर्काइव देख सकते हैं।

और आप देखेंगे कि दरवाज़े के ऊपर बाईं ओर और दाईं ओर, इन बेस-रिलीफ़ के दोनों तरफ़ दो-दो हैं। और एक है मेपलावर कॉम्पैक्ट, दूसरा है हार्वर्ड की स्थापना, और फिर जॉन इलियट, जिसे हम इस वीडियो में दिखाएंगे। तो यह एक ऐसी चीज़ है जो उनके महत्व को दर्शाती है, जो कि कांग्रेसेशनल लाइब्रेरी के ऊपर पत्थर पर उकेरी गई है।

वह एक मण्डली पादरी थे और उस तरह की चर्च नीति के लिए बहुत दृढ़ता से तर्क देते थे। दूसरी बात, जब आप बीकन स्ट्रीट में जाते हैं, तो आप हॉल में हॉल ऑफ फ्लैग्स नामक चीज़ देखेंगे; शीर्ष पर कई खूबसूरत भित्तिचित्र हैं। और अब मैं आपको मूल रूप से उस भित्तिचित्र का एक वीडियो दिखाऊंगा जो मैंने 360 में बनाया था।

और अंदाज़ा लगाइए कि मैसाचुसेट्स के इतिहास में हम जो भित्तिचित्र बना सकते हैं, उनमें से कौन है? यहाँ, हॉल ऑफ़ फ़्लैग्स में एक भित्तिचित्र में जॉन एलियट भारतीयों से बात कर रहे हैं। यह बीकन हिल पर गोल्डन डोम स्टेटहाउस में है।

और यह, फिर से, उनके महत्व को दर्शाता है, जिसे उस क्षेत्र में उस भित्ति चित्र को बनाने और चित्रित करने वाले लोगों द्वारा पहचाना गया था। यहाँ, आप बीकन स्ट्रीट पर स्टेटहाउस में हॉल ऑफ़ फ़्लैग्स में इस शानदार रोटुंडा में जॉन एलियट के भारतीयों को उपदेश देते हुए भित्ति चित्र देख सकते हैं, कॉमन्स के ठीक बगल में, एक गोल्ड डोम, सुंदर स्टेटहाउस। भारतीयों को उपदेश देते हुए जॉन एलियट का भित्ति चित्र यहाँ दिखाया गया है।

तीसरी बात जो दर्शाती है कि वह कौन थे और उनकी उपलब्धियों को पहचानती है, वह है अमेरिका में छपी पहली किताब, बे स्तोत्र पुस्तक। 1640 में बे स्तोत्र पुस्तक छपी थी। बे स्तोत्र पुस्तक का अनुवाद जॉन इलियट ने थॉमस वेल्ड और संभवतः रिचर्ड माथेर और अन्य लोगों के साथ मिलकर किया था।

मूल रूप से, इसने स्तोत्र को कविता में इसलिए डाला ताकि तीर्थयात्री गा सकें और प्यूरिटन भी गा सकें। मैंने बस यहीं गलती की। तीर्थयात्री प्यूरिटन से अलग हैं।

तीर्थयात्री अलगाववादी थे। वे चर्च, एंग्लिकन चर्च से अलग होना चाहते थे। और इसलिए, वे हॉलैंड या कहीं और चले गए।

और फिर वे अमेरिका चले आए, ब्रैडफोर्ड में। वे अलगाववादी थे, जबकि प्यूरिटन चर्च को भीतर से शुद्ध करना चाहते थे। और इसलिए, वे एंग्लिकन चर्च से जुड़े रहे और शुद्ध करने की कोशिश की, इसीलिए उन्हें प्यूरिटन कहा जाता है।

इसलिए, तीर्थयात्रियों, जो अलगाववादी थे, और तीर्थयात्रियों के बीच एक अंतर है। बाद में, वे एकत्र हुए; मुझे लगता है कि 17वीं शताब्दी के अंत में, वे 1700 के दशक से ठीक पहले, लगभग 1690 में, एक साथ एकत्र हुए, मुझे लगता है। लेकिन वैसे भी, उस पर वापस जाते हुए, पहली बे भजन पुस्तक, भजन पुस्तक, का अनुवाद एलियट द्वारा किया गया था और यह अमेरिका में कैम्ब्रिज, मैसाचुसेट्स में प्रकाशित पहली पुस्तक थी।

इसके बाद उनकी महान कृति बाइबिल का अनुवाद है, जिसके सभी 1180 पृष्ठ एल्गोंकिन या वैम्पानोग भाषा में हैं। इलियट ने यह अनुवाद मुख्य रूप से देशी अनुवादकों और अन्य चीजों की मदद से खुद ही किया था, लेकिन मुख्य रूप से उन्होंने खुद ही किया था। 1663 में, अमेरिका में पहली बाइबिल छपी थी।

अमेरिका में पहली बाइबल। किंग जेम्स संस्करण को न छापने का कारण यह है कि किंग जेम्स संस्करण की शुरुआत 1611 में हुई थी। ठीक है, तो यह 1663 है, अमेरिका में छपी पहली बाइबल।

मूलतः, वे अमेरिका में बाइबल को छपने नहीं देंगे। इसलिए उन्हें किंग जेम्स वर्शन की बाइबल, जिनेवा बाइबल और अन्य बाइबलें अमेरिका में आयात करनी पड़ीं। इसलिए, अमेरिका में छपी पहली बाइबल जॉन इलियट द्वारा अनुवादित भारतीय बाइबल थी।

एक और दिलचस्प बात यह है कि अमेरिका में सबसे पुराना और सबसे लंबे समय तक चलने वाला हाई स्कूल रॉक्सबरी लैटिन स्कूल है, जिसकी शुरुआत 1645 में हुई थी और इसकी स्थापना किसने की थी, अंदाज़ा लगाइए, जॉन एलियट ने। जॉन एलियट बोस्टन के ठीक दक्षिण में, रॉक्सबरी में बस गए, बोस्टन से थोड़ा दूर, शायद कुछ मील दक्षिण में। यह अब बोस्टन का एक उपनगर है।

लेकिन पहला रॉक्सबरी लैटिन स्कूल जॉन इलियट ने 1645 में स्थापित किया था। वह स्कूल आज भी मौजूद है। और हमारे पास है। मैं अब आपको इसकी एक तस्वीर दिखाऊंगा।

और बाद में, हम आपको उस 360 डिग्री वीडियो का एक वीडियो भी दिखाएंगे। तो, ये सभी पाँच बातें हैं। और फिर एक आखिरी बात, नंबर छह, इलियट ने 14 प्रार्थना करने वाले भारतीय गाँवों का विकास किया।

तो, नैटिक, कैम्पटन, कैम्पटन, कैम्पटन जैसी जगहें और बोस्टन के आस-पास की दूसरी जगहें, जिन्हें अब दूसरे नामों से जाना जाता है, लेकिन ये सभी भारतीय गांव थे, जॉन एलियट द्वारा 1675 के किंग फिलिप के युद्ध से पहले शुरू किए गए भारतीय गांवों की प्रार्थना करना शुरू करें। तो, वह नैटिक से शुरू करता है, और फिर नैटिक के मॉडल पर विकसित 14 गांवों को उस क्षेत्र में गुणा और बढ़ाया जाता है। तो, एलियट ने एक और काम किया: उन गांवों की स्थापना की और भारतीयों को संपत्तियां सौंपी ताकि वे अपने शहरों का विकास कर सकें।

उन्हें प्रार्थना करने वाले भारतीय कहा जाता था। यहाँ आज भी साउथ बोस्टन में पाए जाने वाले चिह्नों की एक श्रृंखला है जो 14 प्रार्थना करने वाले भारतीय गाँवों की याद दिलाती है जिन्हें इलियट ने विकसित किया और डैनियल गूकिन द्वारा देखरेख की गई। उन्हें वास्तव में प्रार्थना करने की उपाधि, उनकी उपाधि, भारतीयों के लिए प्रेरित, 1660 में थॉमस थोरोगुड या, हाँ, थोरोगुड नामक व्यक्ति द्वारा 1660 में प्राप्त हुई थी।

और इसलिए, यह उपनाम, जॉन इलियट, भारतीयों का प्रेषित, एक तरह का उपनाम है जो हमेशा उनके साथ चलता है। यह 1660 में थॉमस थोरोगुड द्वारा कहा गया था, और फिर यह उनके साथ जुड़ गया। और फिर, अगर आप आज कुछ भी देखें, तो यह हमेशा जॉन इलियट, भारतीयों का प्रेषित ही होगा।

खैर, ये छह बातें जॉन इलियट के महत्व को संक्षेप में दर्शाती हैं। अब, मैं जो करना चाहता हूँ वह यह है कि मैं उनके जन्म के बारे में बात करूँ और उनके शुरुआती वर्षों, इंग्लैंड में बिताए गए

उनके पहले 27 वर्षों का वर्णन करूँ, जहाँ उनका जन्म हुआ था। उनका जन्म 1604 में व्हिटफोर्ड नामक स्थान पर हुआ था।

व्हिटफोर्ड में सेंट जॉन द बैपटिस्ट चर्च ने 5 अगस्त को उनका बपतिस्मा किया। और आमतौर पर, आपका जन्म होने के कुछ समय बाद ही बपतिस्मा हो जाता है। इसलिए, हम मानते हैं कि उनका जन्म, मुझे नहीं पता, 5 अगस्त के बीच हुआ होगा, क्योंकि जाहिर है कि उनका बपतिस्मा नहीं हुआ था, लेकिन उससे थोड़ा पहले हुआ था।

तो, यह संभवतः 1 अगस्त या अगस्त 1604 के शुरुआती दिनों में व्हिटफोर्ड, इंग्लैंड में हुआ था, जो लंदन से लगभग 28 मील उत्तर में है। उनके माता-पिता की शादी भी उसी चर्च में हुई थी। और इसलिए हमारे पास उसका रिकॉर्ड है।

उनके पिता का नाम बेनेट था और उनकी माँ का नाम लैटिस था। उनके पिता एक जमींदार थे लेकिन असल में वे एक बहुत बड़े ज़मींदार थे। उनके पास काफ़ी संपत्ति थी।

और बाद में, उनके भाई, वह थे। वास्तव में, जॉन इलियट तीसरे बच्चे थे। और वास्तव में, उनके भाई और बहनें, बहनें और भाई, बाद में उनके साथ न्यू इंग्लैंड चले गए। उसके बाद, उनका परिवार बड़े पैमाने पर स्थानांतरित होने जा रहा है, और परिवार के कई सदस्य वास्तव में नाज़िंग से रॉक्सबरी जाने वाले हैं, जहाँ वे बस गए थे जहाँ उनका बचपन बीता था।

तो, उनका जन्म लंदन से लगभग 28 मील उत्तर में व्हिटफोर्ड में हुआ था। और फिर उन्होंने वास्तव में अपना बचपन संभवतः 1608 से 1614 या 1618 तक, लगभग 10 साल की अवधि में वहीं बिताया, जब वे 14 से 4 से 14 वर्ष के हुए। मूल रूप से, उन्होंने नाज़िंग नामक स्थान पर समय बिताया। और यहीं वे बड़े हुए।

और यहीं पर उनके माता-पिता, उनके पिता बेनेट की संपत्ति थी। अब, नाज़िंग लंदन से 16 मील उत्तर में है। तो, आपके पास व्हिटफोर्ड 18 मील है। मैं आपको इसकी कुछ तस्वीरें दिखाऊँगा।

और फिर, मूल रूप से, आप वहाँ से दक्षिण की ओर लंदन के उत्तर में 16 मील की दूरी पर आते हैं। और मूल रूप से, वह अपने माता-पिता के बारे में टिप्पणी करता है, मैं, उद्धरण, मैं देखता हूँ कि यह भगवान का मुझ पर एक बड़ा उपकार था कि मैं अपने पहले समय को भगवान के भय, वचन और प्रार्थना के साथ बिता पाया, उद्धरण समाप्त। तो उसके पास ईश्वरीय माता-पिता थे, और हमारे पास उनकी तस्वीरें हैं, और मैं आपको अभी नाज़िंग में ऑल सेंट्स चर्च की तस्वीरें दिखाऊँगा।

नाज़िंग इतना महत्वपूर्ण क्यों है इसका कारण यह है कि नाज़िंग के बहुत से लोग अंततः नई दुनिया में आ जाते हैं। और जब वे बस जाते हैं, तो नाज़िंग के अनुयायी रॉक्सबरी में बस जाते हैं। रॉक्सबरी में, जॉन इलियट बोस्टन के प्रथम चर्च से रॉक्सबरी में उनके "शिक्षक" बनने के लिए जाने वाले हैं।

उन्होंने एक और पादरी टॉम वेल्ड को नियुक्त किया, लेकिन जॉन इलियट नाज़िंग में उस समूह के शिक्षक होंगे। और क्योंकि वे मुख्य रूप से नाज़िंग के थे और उनके भाई-बहन भी उस चर्च में आने लगे। अब जब जॉन इलियट की उम्र लगभग 14 साल थी, तो वे कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी चले गए।

कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी लंदन से लगभग 60 मील उत्तर में है। वह कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी के जीसस कॉलेज में गया था। 1618 से 1622 तक, उन्होंने चार साल मूल रूप से कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी के जीसस कॉलेज में बिताए।

अब, यह महत्वपूर्ण है क्योंकि कैम्ब्रिज में इमैनुएल कॉलेज वह जगह थी जहाँ सभी प्यूरिटन, दंगार्ई, इमैनुएल कॉलेज में थे। वह जीसस कॉलेज में था। यह ज़्यादा मुख्यधारा की तरह की चीज़ थी।

किंग जेम्स वर्शन के अनुवादकों में से एक रोजर एंड्रयूज कैम्ब्रिज में जीसस कॉलेज में पढ़ा रहे थे। इसलिए, इलियट को किंग जेम्स अनुवादकों में से किसी एक से कुछ संपर्क रहा होगा। यह फिर से है, वह लगभग 1618 से 1622 तक वहाँ रहे।

किंग जेम्स संस्करण का अनुवाद 1611 में हुआ था। तो, आप जानते हैं, 10 साल या उससे भी कम, कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय पहुंचने से सात साल पहले। संभवतः उनके पास लैटिन की सात साल की पृष्ठभूमि थी, वे ग्रीक में कुशल थे, और उन्होंने वहां हिब्रू सीखी।

और यह पता चला कि वह हिब्रू का सच्चा प्रशंसक था। और आप इसे बार-बार देखेंगे: बाइबल से परिचित होना, सार्वजनिक भाषण देना, और इस तरह की बयानबाजी। उसने ये सब चीज़ें कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी में सीखी होंगी।

बाद में, उन्होंने अपनी भारतीय बाइबिल को कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय के जीसस कॉलेज को वापस भेज दिया। और उन्होंने यह कहा, उद्धरण, सिवाय माँ के, कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी कॉलेज का जिक्र करते हुए, मैं प्रार्थना करता हूँ, एक सबसे विनम्र पूर्व छात्र क्या पेशकश करता है, एक बेटा हमेशा आपकी प्रार्थनाओं का पालन करता है, उद्धरण समाप्त, जॉन एलियट। तो, जॉन एलियट ने अपनी एक बाइबिल को कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी को यह कहते हुए वापस भेज दिया, अरे, मैं आपका एक पूर्व छात्र हूँ, मैं आपका एक पूर्व छात्र हूँ, यार, मैं अभी भी आपके लिए प्रार्थना कर रहा हूँ।

और यह एक तरह से अच्छा स्पर्श था। 1620 में कैम्ब्रिज में उनके द्वितीय वर्ष में उनकी माँ की मृत्यु हो गई। 1621 में उनके कनिष्ठ वर्ष में उनके पिता की मृत्यु हो गई।

तो अब वह बिना पिता और माता के है; वह कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी में है। उसके पिता ने उसे हर साल आठ पाउंड दिए ताकि वह अपने पिता और माता की मृत्यु के बाद भी अपनी शिक्षा जारी रख सके। लेकिन यह उसके लिए बहुत दुखद रहा होगा, जब वह कॉलेज और अन्य जगहों पर गया था, तब उसके पिता और माता दोनों ही चले गए।

1622 में उन्हें ए.बी. की डिग्री मिली। और फिर उन्होंने जाहिर तौर पर मास्टर्स प्रोग्राम शुरू कर दिया। इसलिए, वह एम.ए. की तलाश में हैं।

लेकिन हुआ ये कि कोविड का अनुभव उन पर हावी हो गया। 1625 में प्लेग फैल गया। 1625 में ही प्लेग की वजह से उन्हें कॉलेज छोड़ना पड़ा।

और इसलिए, प्लेग और 1625 के प्लेग के बाद, वह कैम्ब्रिज छोड़ देता है, और वह कभी वापस नहीं जाता। और यह एक तरह से उसका अंत था। ऐसा लगता है कि उसे 1625 के बाद, उसके तुरंत बाद ही नियुक्त किया गया था।

तो, उसके बाद, उन्हें एक मंत्री के रूप में संदर्भित किया जाता है। और इसलिए 1625 के उस समय से लेकर 1631 में जब वे न्यू इंग्लैंड, बोस्टन गए, के बीच, आपको वहां लगभग छह साल मिले। उनके कैम्ब्रिज अनुभव के बाद, आपको छह साल का अंतराल मिलता है।

और उस समय, उनकी मुलाकात थॉमस हुकर नामक एक व्यक्ति से होती है। थॉमस हुकर, जो 1586 से 1647 तक जीवित रहे, का लिटिल बैडो नामक स्थान पर एक स्कूल था। और यह लंदन के चेम्सफोर्ड से लगभग 30 मील उत्तर-पूर्व में है।

तो, यह लंदन से 30 मील उत्तर-पूर्व में है। और यह चेम्सफोर्ड से थोड़ा आगे है। और हुकर इमैनुएल कॉलेज कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी से स्नातक थे, और हुकर एक सच्चे प्यूरिटन थे।

और इसलिए, हुकर एक प्यूरिटन था। और जब बिशप लॉड, जो वास्तव में प्यूरिटन का विरोध करता था, सत्ता में आया, तो हुकर को एहसास हुआ कि उसे वहाँ से निकल जाना चाहिए, अन्यथा वे मारे जाएँगे। और इसलिए, वह 1630 में हॉलैंड क्षेत्र में चला गया।

और फिर हुकर अमेरिका चले जाते हैं और कुछ समय के लिए बोस्टन में बस जाते हैं। लेकिन हुकर वाकई एक अद्भुत व्यक्ति हैं। हमें और अधिक अध्ययन करना चाहिए, और मेरी वेबसाइट पर जॉन इलियट के लिए सभी तरह के संसाधन मौजूद हैं।

लेकिन थॉमस हुकर पर भी एक किताब है। वह बोस्टन से दूर चले गए, फिर हार्टफोर्ड नामक जगह पर चले गए, जिसे आज हार्टफोर्ड, कनेक्टीकट के नाम से जाना जाता है, जो कनेक्टीकट की राजधानी है, और उन्होंने हार्टफोर्ड की स्थापना की और कनेक्टीकट के पहले गवर्नर बने। यह थॉमस हुकर हैं, जिन्होंने जॉन एलियट के जीवन पर उस समय के बीच जबरदस्त प्रभाव डाला, हार्वर्ड के बाद छह साल की अवधि, 1622 में कैम्ब्रिज के बाद, और जब वह 1631 में अमेरिका के लिए रवाना हुए।

इस बार भी, हुकर अमेरिका आए, लेकिन फिर 1630 के दशक और 1630 के दशक की शुरुआत में इसी समय के आसपास, जॉन कॉटन अमेरिका आए, बोस्टन में एक और प्रसिद्ध प्यूरिटन प्रचारक। थॉमस शेपर्ड भी अमेरिका आए। तो आपके पास इस तरह की पहली पीढ़ी है, और वास्तव में मैं इसे इसी तरह से संक्षेप में प्रस्तुत करना चाहता हूँ।

ये पहली पीढ़ी के लोग हैं। आपके पास विलियम ब्रैडफोर्ड हैं, आपके पास थॉमस हुकर, जॉन कॉटन, शेपर्ड जैसे लोग हैं, थॉमस शेपर्ड, और ये लोग, ये पहली पीढ़ी हैं जो यहाँ तटों पर पहुँची, और इसलिए यह एक तरह से, वे एक अद्भुत और एक विशेष समूह हैं। ये वे लोग हैं जिन्होंने अमेरिका की स्थापना की।

हुकर के स्कूल में, इलियट ने यह लिखा है, और मैं इसे लगभग उनके धर्म परिवर्तन के अनुभव के रूप में देखता हूँ। इस स्थान पर, यानी हुकर के स्कूल में, मुझे बुलाया गया था, जॉन इलियट ने लिखा, मसीह यीशु में ईश्वर की दया के अनंत धन के माध्यम से, मेरी गरीब आत्मा के लिए, क्योंकि यहाँ प्रभु ने मेरी मृत आत्मा से कहा, जियो, जियो, और ईश्वर की कृपा से, मैं जीवित हूँ और हमेशा जीवित रहूँगा। और जब मैं इस धन्य परिवार में आया, तो वह वास्तव में थॉमस हुकर के साथ और उसके घर में रहा।

अतीत में भी उन्होंने ऐसा ही किया था। इसलिए, वह वास्तव में लोगों के परिवारों में एक तरह से नजरबंद था। जब मैं इस धन्य परिवार में आया, तो मैंने ईश्वरीय शक्ति की अद्भुत शक्ति और प्रभावकारिता को पहले कभी नहीं देखा था।

थॉमस हुकर के बारे में क्या, क्या बयान है। वह आदमी असली था, और एलियट ने यह देखा, और उसने उस संदर्भ में कहा कि उसकी आत्मा को जीने के लिए बुलाया गया था, और वह जीया। और इसलिए मैं इसे उसके धर्मांतरण के अनुभव और इस तरह की चीजों के रूप में देखता हूँ।

और इसलिए बस कुछ, यहाँ एक छोटा सा नक्शा दिखा रहा है कि लिटिल बैडो कहाँ था, जहाँ उसने थॉमस हुकर के साथ वे साल बिताए। फिर इलियट, यह अगला कदम है, 1631 में, अमेरिका आया। चूंकि थॉमस हुकर पहले ही अमेरिका आ चुका था, जॉन इलियट लगभग एक साल बाद अमेरिका आता है, और वह बोस्टन, बोस्टन के पहले चर्च में जाता है।

जहाज नाजिंग से रवाना होता है और 60 यात्रियों के साथ लायन, द लायन, ल्योन नामक नाव पर आता है, जिसे कैप्टन पियर्स ने लायन शिप नाम दिया है। यह समुद्र के पार 10 सप्ताह की यात्रा थी, 10 सप्ताह। आप कल्पना कर सकते हैं कि कोई भी नहीं था; आप नहीं जानते कि कब तूफान आने वाला है, और आप बस निकल पड़ते हैं।

और 10 सप्ताह बाद, यानी ढाई महीने बाद, वे बोस्टन क्षेत्र में पहुँचते हैं। यह दिलचस्प है कि जब जॉन एलियट उस 10 सप्ताह की यात्रा पर जाते हैं, तो जॉन विन्थ्रोप की पत्नी और बच्चे जॉन विन्थ्रोप को याद करते हैं, जो बोस्टन और मैसाचुसेट्स की पहली पीढ़ी के प्रमुख पात्र थे। जॉन विन्थ्रोप की पत्नी और बच्चे एलियट के साथ उसी नाव पर यात्रा कर रहे थे। उस नाव पर एलियट को मंत्री कहा जाता है।

जब वह बोस्टन पहुँचता है, तो वह फर्स्ट चर्च जाता है, और उन्हें इस समय मूल रूप से एक पादरी की आवश्यकता होती है। मूल रूप से, मुझे उनमें से दो कहना चाहिए: लायन की नाव में 200 टन आपूर्ति थी जिसे विन्थ्रोप ने बोस्टन के लिए मांगा था। जाहिर है, लोग स्कर्वी से मर रहे थे, और स्कर्वी एक तरह का विटामिन सी की कमी है जो लगभग तीन महीने तक रहती है। इसका

बहुत बड़ा प्रभाव हो सकता है। लोग मर जाते, लेकिन उन्हें नाव मिल गई और इसलिए, उस लायन नाव पर आपूर्ति के कारण कई लोगों की जान बच गई।

इसके बाद इलियट बोस्टन के प्रथम चर्च में आता है, और जॉन विल्सन, जो बोस्टन के प्रथम चर्च का पादरी है, इंग्लैंड लौटता है, अपनी पत्नी को उसके साथ नई दुनिया में वापस आने के लिए प्रोत्साहित करने की कोशिश करता है। इसलिए, बोस्टन का प्रथम चर्च पादरी के बिना रह गया, और इलियट एक पादरी के रूप में आया, इसलिए उसने बोस्टन के प्रथम चर्च में एक साल तक काम किया। जॉन विल्सन असफल रहा, और इसलिए वह बोस्टन लौट आया, लेकिन वह अपनी पत्नी को मनाने में असफल रहा।

क्या आप कल्पना कर सकते हैं कि आपके परिवार में इस तरह की बात पर बातचीत करना कितना मुश्किल होगा? वैसे, बोस्टन, इस समय, 1631... यहाँ पाँचवें मीटिंग हाउस, रॉक्सबरी के पहले चर्च का एक छोटा सा वीडियो क्लिप है, जहाँ इलियट ने थॉमस वेल्ड के मंत्रालय के तहत, मूल रूप से 1632 से 1680 में अपने जीवन के अंत तक शिक्षा दी थी। तो, उन्होंने इस चर्च में लगभग 60 साल बिताए, और यह चर्च उनके भारतीय कार्य के लिए एक स्पिंगबोर्ड था जिसे उन्होंने बाद में किया, लेकिन भारतीय कार्य लगभग 1646 में हुआ। इसलिए, भारतीय परियोजना में वास्तव में शामिल होने से पहले उन्हें यहाँ लगभग 10, 14 साल मिले।

बहुत से लोग बोस्टन कॉमन और उसके बगल के बगीचों से परिचित हैं, और फिर अगर आप कॉमनवेल्थ स्ट्रीट पर उसी दिशा में चलते रहें, तो यह उन बगीचों के एक ब्लॉक के भीतर जैसा है। अब, विल्सन फिर वापस आता है, लेकिन लोग एलियट से प्यार करते हैं, और वे कहते हैं, एलियट, क्या आप हमारे, उद्घरण, शिक्षक के रूप में रहेंगे? आपके पास एक मंत्री है और फिर आपके पास एक शिक्षक है। एलियट, क्या आप हमारे शिक्षक के रूप में रहेंगे? और एलियट कहते हैं, नहीं, यार, मैंने नाज़िंग के लोगों से वादा किया था कि अगर वे यहाँ आएंगे, तो मैं उनका पादरी बनूँगा।

और इसलिए मूल रूप से, नाज़िंग लोग बोस्टन के दक्षिण में आकर बस गए। मुझे नहीं पता, यह कुछ मील की दूरी पर है। आज यह बहुत करीब है।

यह बोस्टन का एक उपनगर है। और उनके लोग, नाज़िंग, रॉक्सबरी में बस गए। तो इलियट ने कहा, नहीं, मैं बोस्टन के फर्स्ट चर्च में नहीं रह सकता।

इसलिए वह रॉक्सबरी चले गए, और यह रॉक्सबरी के फर्स्ट मीटिंग हाउस और फर्स्ट चर्च में है, जो फर्स्ट चर्च के बारे में है, जो लगभग 40 साल तक चला। यह लगभग 20 फीट गुणा 30 फीट का था। आप कल्पना कर सकते हैं कि यह कितना बड़ा है।

कुछ लोगों के पास बड़े घरों में रहने के लिए कमरे होते हैं जो 20 फीट गुणा 30 फीट के होते हैं। अब पाँचवाँ मीटिंग हाउस वहीं है जहाँ एलियट ने मूल मीटिंग हाउस की स्थापना की थी। तो, वहाँ एक बड़ा चर्च है, कोई बड़ा चर्च नहीं, बल्कि एक तरह का विशिष्ट न्यू इंग्लैंड चर्च वहाँ खड़ा है।

और असल में, मैं आपको दोनों की कुछ तस्वीरें और 360 और चीज़ें दिखाऊँगा। चर्च के ठीक बगल में, उनके पास रॉक्सबरी में आज भी एक एलियट स्क्रायर है। अभी तक रद्द नहीं किया गया है।

और इसलिए, यह चर्च है, फर्स्ट चर्च, जहाँ एलियट ने इसकी स्थापना की थी, और अब उन्होंने चर्च के ठीक बगल में एलियट स्क्रायर को समर्पित कर दिया है, जो रॉक्सबरी में एक बहुत ही अच्छा क्षेत्र है। और इसलिए, हमारे पास इसकी कुछ तस्वीरें हैं। यहाँ इस पाँचवें मीटिंग हाउस, रॉक्सबरी के पहले चर्च का एक छोटा सा वीडियो क्लिप है, जहाँ एलियट ने थॉमस वेल्ड के मंत्रालय के तहत, मूल रूप से 1632 से 1690 में अपने जीवन के अंत तक शिक्षा दी थी।

तो, इस चर्च में लगभग 60 साल रहे। इस चर्च से, एक स्पिंगबोर्ड था, और फिर भारतीय कार्य था जो उन्होंने बाद में किया। लेकिन भारतीय कार्य लगभग 1646 में हुआ होगा।

तो, भारतीय परियोजना पर वास्तव में काम करने से पहले उन्हें यहाँ लगभग 10, 14 साल का समय मिला है। यहाँ इलियट स्क्रायर का एक छोटा सा वीडियो क्लिप है, जो रॉक्सबरी में चर्च के ठीक बगल में है। मूल चर्च में लगभग 25 लोग थे।

उनके परिवार का एक बड़ा हिस्सा, जिसमें उनकी बहन सारा, उनके पति विलियम कर्टिस, उनकी बहन मैरी और उनके भाई फिलिप शामिल थे, रॉक्सबरी में उनके साथ शामिल हो गए। उनके दो और भाई जैकब और फ्रांसिस थे। वे बोस्टन में ही रहे।

तो, कुछ और भाई आए, लेकिन वे बोस्टन में ही रहे। अब मैं बदलाव करना चाहता हूँ। तो, अब वह बोस्टन 1631, 1632 से नीचे आ गया है और रॉक्सबरी में इस चर्च की स्थापना की है, 25 लोग, एक छोटा चर्च, और ऐसी ही चीज़ें।

लेकिन उनकी पत्नी, जिनसे उनकी सगाई हो चुकी थी या वादा किया था, अभी भी इंग्लैंड में थीं। वह तब आई। 1632, सितंबर 1632 और 4 सितंबर को, रॉक्सबरी चर्च में पहली शादी हुई, थॉमस वेल्ड वहां पादरी थे।

तो, इलियट एक तरह से शिक्षक थे। थॉमस वेल्ड वहां के उपदेशक, मंत्री थे। रॉक्सबरी चर्च में पहली शादी जॉन इलियट की हन्ना ममफोर्ड से हुई थी।

हन्ना ममफोर्ड 50 साल से भी ज़्यादा समय तक उनकी पत्नी रहेंगी। और वैसे भी, वे दोनों, वह, वह अपनी तरह की कुछ हैं, अपने आप में। और इसलिए मैं उन्हें देखना चाहता हूँ।

वह अपने आतिथ्य और नर्सिंग कौशल के लिए जानी जाती थीं। और इसलिए विसलो ने अपनी टिप्पणी या एलियट की जीवनी में एलियट की पत्नी हन्ना ममफोर्ड का जिक्र करते हुए कहा कि एलियट के घर में उनकी भागीदारी बहुआयामी थी। वह शायद उन अतिशयोक्ति की हकदार हैं, जिनकी प्रेरणा उन्होंने दी।

दूसरे शब्दों में, यह महिला एक वास्तविक चरित्र है, और वह इलियट के लिए एक मैच है। और मैं अब आपको कुछ कहानियाँ सुनाता हूँ। अगले 10 से 14 वर्षों के लिए, 32 से 1632 से 1646 तक, इलियट उन 12 से 14 वर्षों पर ध्यान केंद्रित करने जा रहा है, और वह रॉक्सबरी चर्च पर ध्यान केंद्रित करने जा रहा है।

तो अब 1631, वह 1632 में आता है, वह रॉक्सबरी चला जाता है और 32 से 42, 46, 1646 तक, अगले 10, 12, 14 वर्षों के लिए, वह रॉक्सबरी चर्च में अपने मंत्रालय पर ध्यान केंद्रित करता है। जब वह भारतीयों के साथ जुड़ता है तो यह बदल जाता है। लेकिन वैसे भी, मैं कुछ कहानियाँ बताना चाहता हूँ।

समस्या रॉक्सबरी के साथ है; वहाँ 1645 में आग लगी थी, और जाहिर है, वहाँ बारूद के 17 बैरल थे। और जाहिर है, आग ने उस इमारत को चपेट में ले लिया और उसके टुकड़े-टुकड़े हो गए। और फिर मूल रूप से शहर, एक छोटे से शहर में कई अन्य इमारतें आग की चपेट में आ गईं, और सब कुछ जल गया।

और इसलिए, जाहिर है, इस तरह की आग की घटना पूरी तरह से नहीं थी; यह अक्सर न्यू इंग्लैंड में होता था। लेकिन मैं हन्ना और उसकी पत्नी और उनके बीच किस तरह का रिश्ता था, यह दिखाने के लिए तीन पारिवारिक कहानियाँ बनाने जा रहा हूँ। फिर, जॉन इलियट की विशेषताएँ बताने वाले छह चरित्र गुण हैं, और वे उसके बाकी जीवन के लिए उसकी विशेषताएँ होंगी।

सबसे पहले, तीन पारिवारिक कहानियाँ हैं। विल्सन वॉकर, जिन्होंने जॉन इलियट पर एक अध्याय वाली किताब लिखी थी, ने कहा कि मूल रूप से, वह, जॉन इलियट और जोनाथन एडवर्ड्स व्यापार को मंत्री पद के साथ असंगत मानते थे। इसलिए व्यापार यहाँ खत्म हो गया है, मंत्री यहाँ खत्म हो गए हैं।

और इसलिए, वे इस कार्यालय के व्यापारिक पक्ष में गड़बड़ नहीं करना चाहते थे या अपने हाथ गंदे नहीं करना चाहते थे। इसलिए, उन्होंने खुद को इससे अलग कर लिया, और इसे अपनी पत्नी को सौंप दिया। कुछ लोगों को हन्ना और जॉन, एलिजाबेथ और एलियट, और मुझे खेद है, ल्यूक अध्याय दो से एलिजाबेथ और जकर्याह कहा जाता है।

यहाँ एक उदाहरण दिया गया है कि एलिअट कितना अलग-थलग था, उसने घर और घर के कारोबार का नियंत्रण अपनी पत्नी को सौंप दिया था। एक बार की बात है, हन्ना और गायें बाहर निकल गईं, ठीक है, तो गायें बाहर निकल गईं और घर के सामने के दरवाज़े पर आ गईं। और इसलिए, हन्ना ने खींच लिया, और उसने कहा, अरे, जॉन, यहाँ आओ, इन गायों और अन्य चीज़ों की जाँच करो।

अरे, ये गायें किसकी हैं? खैर, जॉन ने गायों को देखा। गायें उसकी गायें थीं। जॉन गायों को देखता है, लेकिन वह नहीं जानता कि वे कौन हैं। वह कहता है, ओह, वे शायद कोई पड़ोसी होंगे।

हन्ना ने उसके साथ एक चाल चली क्योंकि वे उसकी गायें थीं, लेकिन वह उन्हें नहीं जानता था। और अगर आप आसपास रहे हैं और गायों को पाला है, तो आप जानते हैं, और खासकर गायों

की उस छोटी संख्या में, आप अपनी गायों को जानते हैं, ठीक है? वह अपनी गायों को नहीं जानता था। हन्ना ने उसके साथ एक चाल चली।

मुझे लगा कि यह बहुत मजेदार है। उसका सेंस ऑफ़ ह्यूमर बहुत अच्छा था। दरअसल, उसका सेंस ऑफ़ ह्यूमर भी बहुत अच्छा था।

तो, ठीक है, यह एक है। आप बस वहाँ थोड़ा सा रिश्ता देख सकते हैं। यहाँ एक और है। माफ़ करें।

एलियट का एक दुश्मन था। और यह आदमी एलियट से नफरत करता था। और वह एलियट के खिलाफ लिख रहा था।

वह जॉन इलियट और इस तरह की चीज़ों के खिलाफ़ बोल रहा था। वह आदमी बीमार हो गया। और जॉन इलियट बहुत दयालु व्यक्ति थे।

मुझे विनम्र और दयालु शब्द सीखने हैं। एक देशी गीत है जो इसी तरह से है। विनम्र और दयालु होना अच्छा है।

तो उसने जो किया वह यह था कि वह बीमार था। हन्ना उस समय नर्सिंग के कामों में बहुत अच्छी थी, ठीक है? वह तब जाती है और उस आदमी के साथ काम करती है, और वह आदमी ठीक हो जाता है। फिर जॉन इलियट ने इसे यहीं नहीं छोड़ा।

वह उस आदमी को, जो उसका दुश्मन है, आमंत्रित करता है, जिसके बारे में उसे पता है कि वह उसके खिलाफ लिखता रहा है, उसकी पीठ पीछे बोलता रहा है, और यह सब गंदा काम करता रहा है। वह उसे अपने घर बुलाता है। और जब वह उसके घर आता है, तो वह उसे डांटता नहीं है।

वह उस आदमी के साथ कुछ भी बुरा नहीं करता। वह बस उससे दोस्ती करता है। इलियट के पास इस तरह की चीज़ थी कि अगर तुम मेरे घर आओ, तो तुम्हें अंदर बुलाया जाएगा, और ऐसी ही चीज़ें।

और इसलिए मूल रूप से, वह व्यक्ति अपने दुश्मन से अपने बड़े समर्थकों में से एक बन गया। तो यह जॉन इलियट के स्पर्श की तरह है, कोमल और दयालु और ऐसी ही चीज़ें। और वह लोगों से प्यार करने के तरीके से चीज़ों को बदलने में सक्षम था, जिसमें हम बाद में भारतीयों को भी देखेंगे।

तो, यह उनके घर की एक और विशेषता है। अंत में, यह व्यवसाय से भी थोड़ा जुड़ा हुआ है। ठीक है, तो जॉन इलियट ऊपर जा रहे हैं, और चर्च के कोषाध्यक्ष उन्हें भुगतान करने जा रहे हैं।

इसलिए, उसे चर्च से वेतन मिल रहा है, और उसका वेतन बढ़ता जा रहा है। लेकिन चर्च का कोषाध्यक्ष जानता है कि एलियट बहुत उदार व्यक्ति है। इसलिए, वह कहता है, मैं नहीं चाहता कि तुम यह पैसा और सामान खो दो।

और इसलिए, वह जो करता है वह यह है कि वह एक रूमाल निकालता है और उसे बहुत कसकर गांठों से बांधता है और एलियट की मजदूरी को इस रूमाल में बांधता है, और फिर इसे इस रूमाल में कसकर बांधता है, और फिर एलियट को घर भेज देता है ताकि वह इसे अपनी पत्नी के पास ले जाए और इस तरह की चीजें करे। खैर, एलियट, अपने घर के रास्ते में, एक विधवा महिला से मिलने गया। और यह विधवा महिला परेशानी में थी, और वह गरीब थी और इस तरह की चीजें।

और एलियट बहुत ही उदार व्यक्ति थे। अगर आपने अभी तक यह नहीं पढ़ा है, तो वह बहुत ही उदार व्यक्ति थे। इसलिए, उन्होंने कहा, मैं आपको अपना कुछ पैसा देना चाहता हूँ।

मुझे अभी-अभी वेतन मिला है। तो यहाँ, मैं तुम्हें कुछ पैसे और सामान देना चाहता हूँ। यह गरीब विधवा और सामान।

इसलिए, वह रूमाल बाँधने की कोशिश करता है, लेकिन रूमाल इतना कसकर बंधा होता है कि वह उसे खोल नहीं पाता। और इसलिए अंत में, वह बस इतना कहता है, ठीक है, मुझे लगता है कि भगवान चाहते हैं कि यह सब तुम्हारे पास हो। और वह पूरा रूमाल विधवा महिला को दे देता है और बाहर चला जाता है।

आपको आश्चर्य होगा कि जब वह घर आया और बोला, मैंने अपनी पूरी तनख्वाह इस महिला को दे दी, तो क्या हुआ। और उसे अपनी पत्नी हन्ना ममफोर्ड का सामना करना पड़ा। तो खैर, यह फिर से उसकी दयालुता, उसकी उदारता और वह कितना दयालु व्यक्ति था, यह दर्शाता है।

यह वास्तव में आश्चर्यजनक है। अब, जोनाथन और जॉन इलियट पर तीन कहानियाँ हैं, बस पृष्ठभूमि जानने के लिए। अब, मैं छह विशेषताओं पर जाना चाहता हूँ, और हम इन पर जल्दी से चर्चा करेंगे।

वह बहुत ही व्यावहारिक व्यक्ति हैं। मीटिंग हाउस की ओर पहाड़ी पर चढ़ते हुए, कॉटन माथेर, जिन्होंने 1702 तक *मैग्नालिया क्रिस्टी अमेरिकाना* इतिहास लिखा था, मेरा मानना है कि यह था, कॉटन माथेर ने अमेरिका का यह इतिहास लिखा है और जॉन इलियट पर एक पूरा अध्याय लिखा है। उन्होंने कहा कि जब जॉन इलियट चर्च और मीटिंग हाउस की ओर पहाड़ी पर चढ़ रहे थे, तो मूल रूप से, उन्होंने यह कहा, यह रास्ता है, यह स्वर्ग के रास्ते जैसा है।

तो, वह पहाड़ी पर चढ़ रहा है। उसने कहा, यह स्वर्ग के रास्ते जैसा है, यह ऊपर की ओर है। और सच में, रास्ते में कांटे और झाड़ियाँ भी हैं।

और इसलिए वह मूल रूप से पहाड़ी पर चढ़ता है, लेकिन वह इसे आध्यात्मिक पाठ में बदल देता है, और इसमें कांटे और झाड़ियाँ भी हैं। ऐसा लगता है कि वह बहुत ही आम लोक उपमाओं का

उपयोग करता है। ये उपमाएँ जो वह आम दुनिया के साथ बनाता है, भारतीयों के साथ बहुत अच्छी तरह से काम करेगी जब वह बाद में उनका सामना करेगा और भारतीयों के लिए अपने उपदेशक की मदद करेगा।

ऐसा लगता है कि वह एक शोक करने वाला व्यक्ति था। मुझे यह पसंद है। और वह अपने छात्रों से कहा करता था, मैं प्रार्थना करता हूँ, ध्यान रखो कि तुम शोक करने वाले पक्षी बनो।

वह एक शोक करने वाले व्यक्ति थे, और उन्होंने अपने छात्रों को इस संबंध में प्रोत्साहित किया। मुझे लगता है कि यह एक अच्छी विशेषता है। तो, वह संयमी भी थे, और यह एक तरह से मज़ेदार है।

उसे एक अजनबी के घर पर कुछ पीने के लिए आमंत्रित किया गया था। तो उस आदमी ने उसे कुछ शराब की पेशकश की, जिसके बारे में उसने बताया कि यह शराब और पानी का मिश्रण है। उसने जवाब दिया, शराब एक उल्लेखनीय, उदार मदिरा है, और हमें इसके लिए विनम्रतापूर्वक आभारी होना चाहिए।

लेकिन जैसा कि मुझे याद है, पानी उससे भी पहले बनाया गया था। और पानी ही उनका पसंदीदा पेय था। इसलिए, उन्होंने शराब की जगह पानी पिया।

वह आदमी उसे शराब देता है। वह कहता है, शुक्रिया, लेकिन नहीं, मैं सिर्फ पानी और दूसरी चीज़ें लूँगा, जो उस दिन बहुत ही असामान्य था। बहुत संयमी आदमी।

मुझे लगता है कि हमने पहले भी उनका आतिथ्य दिखाया है। उस दिन न्यू इंग्लैंड में बहुत कम लोग ऐसा करते। अब, यहाँ एक और मामला है जहाँ उनका मि कासा, सु कासा वाला वाक्य आता है।

1650 में, उन्होंने गेब्रियल नामक एक फ्रांसीसी जेसुइट मिशनरी को अपने घर में एक कैदी के रूप में सर्दी बिताने के लिए आमंत्रित किया। इसलिए उन्होंने खोला, न्यू इंग्लैंड में सर्दियाँ बहुत कठोर होती हैं। और इसलिए, उन्होंने अपना घर खोला और इस जेसुइट, मूल रूप से एक मिशनरी को अपने घर में बुलाया और सर्दियों के लिए रहने के लिए कहा।

फिर से, यह उनके आतिथ्य को दर्शाता है। वह असहिष्णु नहीं था, जैसा कि कुछ अन्य लोग दावा करते हैं। यह आदमी असहिष्णु व्यक्ति नहीं था, लेकिन बहुत, वह असहिष्णु कट्टरपंथी नहीं था जैसा कि कुछ लोग दावा करते हैं।

अब, वह तब भी था जब आप 1180 पृष्ठों की बाइबिल का अनुवाद अल्गोन्किन भाषा में करते हैं, जिसे कोई नहीं जानता; उनके पास कोई साहित्य नहीं है। उनके पास कुछ भी नहीं है, उनके पास कुछ भी नहीं है। आपको बिना किसी व्याकरण, बिना किसी शब्दकोश या शब्दकोश के शुरुआत से ही भाषा सीखनी होगी।

और आपको यह सब शुरू से ही बनाना होगा और फिर बाइबल का इस बहुत ही कठिन भाषा में अनुवाद करना होगा। इलियट ने ऐसा किया। ऐसा करने का एकमात्र तरीका है काम की नैतिकता, एक मजबूत काम की नैतिकता, परिश्रम और दृढ़ता, बहुत अधिक परिश्रम और बहुत अधिक दृढ़ता के माध्यम से।

कॉटन माथेर, फिर से 1702 के आसपास, एलियट को देखता है, और कहता है, इसमें लिखा है, एलियट का नाम उल्टा लिखने पर क्या होगा? और वे इस तरह के अनाग्राम-प्रकार की चीजों के साथ खेलते थे। और इसलिए एलियट का नाम उल्टा लिखने पर TOIL है; इसे कैसे लिखा जाता है? TOIL, toil, और फिर E से एलियट। ठीक है।

तो, TOILE, अंत में E के साथ toile। और यही उनका चरित्र था। उन्होंने मेहनत की।

यह व्यक्ति दृढ़ निश्चयी और मेहनती था, और उसमें काम करने की दृढ़ नैतिकता थी। अन्यथा, वह जो कुछ भी कर पाया, उसका एक चौथाई भी नहीं कर पाता। यह देखना आश्चर्यजनक है कि इस एक व्यक्ति ने क्या किया।

यह बिल्कुल आश्चर्यजनक था। और इसके लिए यह परिश्रम, यह दृढ़ता, इसे हम आज दृढ़ता का लचीलापन कहेंगे, एक लक्ष्य का पीछा करना और उस पर कड़ी मेहनत करना। और अंत में, विनम्रता।

जॉन इलियट जब खुद का वर्णन करते हैं, तो वे खुद को देखते हैं, वे कहते हैं, "मैं जंगल में एक झाड़ी मात्र हूँ। मैं जंगल में एक झाड़ी मात्र हूँ।" और कई लेखकों ने, यहाँ तक कि एक आधुनिक लेखक ने भी, इस बात की ओर इशारा किया है।

मैं तो जंगल में एक झाड़ी मात्र हूँ। वह अविश्वसनीय चीजें करने जा रहा है। और उसके भित्तिचित्र, वे उसे संगमरमर में तराशने जा रहे हैं जो उसके जीवित रहने के 400, 500 साल बाद तक टिके रहेंगे।

और फिर भी वह कहता है, मैं तो जंगल में एक झाड़ी मात्र हूँ। यह आदमी विनम्र था और उसने कई तरीकों से परमेश्वर को महिमा दी। अब मैं फिर से गियर बदलना चाहता हूँ।

उनका एक जुनून स्कूल था। और इसलिए स्कूल, जो मूल निवासियों के लिए स्कूल हैं, हमारे प्रेरितों की पसंदीदा वस्तुएँ थीं। यदि सुधार का कार्य स्थायी होना था, तो युवाओं की शिक्षा में नींव रखी जानी चाहिए।

इसलिए, इलियट को पता था कि अगर वह ऐसा था, तो यह बात जिससे वह जुड़ा हुआ था, भारतीयों और साथ ही उसकी अपनी मंडली के साथ, स्थायी होने जा रही थी, उन्हें शिक्षा पर ध्यान केंद्रित करने की आवश्यकता थी, जो आज भी सच है। इसलिए, उन्होंने प्रेरित किया कि स्कूल मास्टर्स और स्कूल की अध्यापिकाओं के समर्थन के लिए एक वार्षिक विनियोग होना चाहिए, उद्धरण समाप्त। मैथर, कॉटन मैथर, इस बारे में देखते हैं और कहते हैं, कि रॉक्सबरी, वह इलियट का चर्च है, वह इलियट का काम है, कि रॉक्सबरी ने पहले कॉलेज, हार्वर्ड के लिए,

किसी भी शहर की तुलना में, या, अगर मैं गलत नहीं हूँ, तो पूरे न्यू इंग्लैंड में अपने बड़े शहर की तुलना में, जनता के लिए अधिक विद्वानों को प्रदान किया है।

इसलिए, इलियट ने वास्तव में अपने गृहनगर और फिर भारतीयों के साथ शिक्षा पर ध्यान केंद्रित किया। और वह जा रहा है, हम इसे यहाँ एक सेकंड में देखने जा रहे हैं। वह बच्चों को निर्देश देने, कैटेचिज़्म बनाने के लिए किए गए प्रयासों के लिए उल्लेखनीय था।

इसलिए, वह ऐसे धर्मशिक्षा देते हैं जो बच्चों के साथ अच्छी तरह से काम करते हैं, कॉटन माथेर ने कहा, उद्धरण, जैसे कि जब कुछ जेसुइट्स को वाल्डेन्सियन के बीच उनके बच्चों को भ्रष्ट करने के लिए भेजा गया था, तो वे बहुत निराशा और भ्रम के साथ लौटे क्योंकि सात साल के बच्चे, यानी वाल्डेन्सियन, उन सभी में से सबसे अधिक विद्वान का सामना करने के लिए पर्याप्त रूप से सिद्धांतबद्ध थे। इसलिए अगर रॉक्सबरी, रॉक्सबरी, एलियट के समूह के अच्छे लोगों के बीच किसी भी बहकावे में आने दिया गया, तो मुझे विश्वास है कि उन्हें देश के किसी भी हिस्से की तरह ही एक अच्छी तरह से शिक्षित जगह में कम शिकार मिलेगा। दूसरे शब्दों में, एलियट ने अपने बच्चों को इतना अच्छा प्रशिक्षित किया है कि ये भेड़िये आते हैं और बहकाने और धर्मत्याग करने की कोशिश करते हैं, और बच्चों को गुमराह करते हैं।

बच्चे इतने होशियार हैं कि उन्हें, वाल्डेन्सियन बच्चों की तरह ही, शास्त्रों में प्रशिक्षित किया गया था, और वे उन्हें प्राप्त नहीं कर सके। तो, वैसे भी, यह कॉटन माथेर की इलियट और वहां की कुछ स्कूली चीजों के बारे में टिप्पणी है। कॉटन माथेर ने भी, अपने *मैग्रेलिया क्रिस्टी अमेरिकाना*, 1702 में, इलियट को यह कहते हुए दर्ज किया है, उद्धरण, भगवान, और यह एक तरह से उनकी प्रार्थना है, उद्धरण, भगवान, हमारे बीच हर जगह स्कूलों के लिए, कि हमारे स्कूल फल-फूल सकें, कि इस सभा का हर सदस्य घर जाकर अपने शहर में प्रोत्साहित होने के लिए एक अच्छा स्कूल प्राप्त कर सके, कि मरने से पहले, हम अपने देश के हर बागान में एक अच्छे स्कूल को प्रोत्साहित होते हुए देखकर बहुत खुश हो सकें, उद्धरण समाप्त।

अब, उन्होंने वास्तव में यह कैसे किया? खैर, रॉक्सबरी लैटिन स्कूल। उन्होंने लगभग 1645 में इस रॉक्सबरी लैटिन स्कूल की शुरुआत की, और जॉन के भाई फिलिप, हेडमास्टर बन गए। ठीक है, तो फिलिप, जॉन का भाई, इस रॉक्सबरी लैटिन स्कूल का हेडमास्टर बन गया, जिसमें तब एक प्रवेश द्वार था।

रॉक्सबरी लैटिन स्कूल से निकलने वाले छात्र हार्वर्ड जाते हैं, और आज भी, जब मैं अपनी बेटी नतान्या से बात करता हूँ, और वे अपने बच्चे के लिए स्कूल देख रही होती हैं, तो वह कहती है कि उसने आज भी रॉक्सबरी लैटिन स्कूल देखा है, और 20 प्रतिशत, आज भी रॉक्सबरी लैटिन स्कूल में जाने वाले 20 प्रतिशत लोग हार्वर्ड में प्रवेश पाते हैं। तो यह एक तरह से अद्भुत स्कूल है, आज भी, यानी 19 या 2021। अब, वह एक स्कूल था, उसका रॉक्सबरी लैटिन स्कूल, जो अमेरिका का सबसे पुराना निरंतर चलने वाला स्कूल है।

कुछ अन्य स्कूलों के साथ इस पर थोड़ी बहस हुई है, लेकिन मोटे तौर पर 1645 से लेकर आज तक, और यह अभी भी मजबूती से चल रहा है। मैं आपको कुछ तस्वीरें दिखाऊंगा, और अभी

इसका एक वीडियो भी है। अगला स्कूल जमैका प्लेन था, और रॉक्सबरी लैटिन स्कूल जमैका प्लेन स्कूल था।

यह जमैका प्लेन स्कूल अभी भी मौजूद है, और यह जमैका प्लेन में इलियट स्ट्रीट पर एक छोटा सा स्कूल है, जो बोस्टन के ठीक दक्षिण में है। तो, यह सब कुछ अब बोस्टन के दक्षिण में रॉक्सबरी, डोरचेस्टर, जमैका प्लेन क्षेत्र में होता है। यह वास्तव में बोस्टन से बहुत दूर नहीं है।

जमैका प्लेन, मैं वहां स्कूल गया हूं, और यह अमेरिका का पहला एकीकृत स्कूल है। उन्होंने कहा, मूल रूप से, अश्वेत लोग, भारतीय और गोरे सभी एक ही स्कूल में थे। अश्वेत, भारतीय और गोरे सभी एक ही स्कूल में थे।

यह एक एकीकृत स्कूल था। हम अभी बात कर रहे हैं; उन्होंने वहां एक बड़ा दान दिया। मुझे लगता है कि यह 1690 के आसपास था, लेकिन यह अमेरिका के पहले एकीकृत स्कूलों में से एक है, जिसकी स्थापना, अनुमान लगाइए, जॉन एलियट ने की थी। वह एक अविश्वसनीय दूरदर्शी व्यक्ति है, मेरा मतलब है, वह एक अद्भुत व्यक्ति है।

यहाँ एलियट स्कूल ऑफ फाइन आर्ट्स का एक पैनोरमा है। उन्होंने 1690 में अपनी मृत्यु के बाद उन्हें 75 एकड़ जमीन दी थी। वह स्कूल आज भी मौजूद है, और यहाँ आज उस स्कूल का एक पैनोरमा है।

और जब मैं ये तस्वीरें ले रहा था, तो एक एशियाई जोड़ा, एक अश्वेत जोड़ा, एक श्वेत जोड़ा वहाँ आया। यह आज भी एक एकीकृत विद्यालय है। वैसे, यह जमैका प्लेन में एलियट स्ट्रीट पर स्थित है।

हम यहीं नहीं रुकते। तो, हमारे पास रॉक्सबरी लैटिन स्कूल और जमैका प्लेन स्कूल है। मुझे लगता है कि आज इसे स्कूल ऑफ फाइन आर्ट्स और कुछ और कहा जाता है। वे जमैका प्लेन में एलियट स्ट्रीट पर हैं।

हार्वर्ड यूनिवर्सिटी। हार्वर्ड यूनिवर्सिटी और मैं आपको एक पट्टिका दिखाऊंगा, और फिर हार्वर्ड यूनिवर्सिटी के चारों ओर देखूंगा, यह अब मैथ्यूज हॉल पर है, वहाँ एक पट्टिका है जो बताती है कि इंडियन कॉलेज कहाँ था। हार्वर्ड यूनिवर्सिटी में इंडियन कॉलेज शुरू करवाने में जॉन इलियट का बहुत बड़ा योगदान था।

अब हार्वर्ड के लोगों ने वास्तव में ऐसा किया, और यह हार्वर्ड में बनी पहली ईंट की इमारत थी, हार्वर्ड विश्वविद्यालय। हार्वर्ड जाओ, तुम जानते हो, यह सही है, इमारत, नींव, उन्होंने वास्तव में इसे गिरा दिया। और इसे कब गिराया गया? हाँ, इसे 1698 में ध्वस्त कर दिया गया था।

1698 में, उन्होंने इंडियन कॉलेज को ध्वस्त कर दिया। हालाँकि, इंडियन कॉलेज वहाँ था, और तब इलियट की आशा थी कि नैटिक और इन अन्य 14 प्रार्थना करने वाले भारतीय गाँवों से, वे इन भारतीय छात्रों को हार्वर्ड विश्वविद्यालय भेजेंगे। वास्तव में, हार्वर्ड विश्वविद्यालय में इंडियन कॉलेज

के तहखाने में, 1698 में इसे नष्ट करने से पहले, उस इमारत के तहखाने में, एक प्रिंटिंग प्रेस था जिस पर उन्होंने 1663 में इलियट की बाइबिल छपी थी।

तो, यह आश्चर्यजनक है कि हार्वर्ड का भारतीय कॉलेज भवन, उस तहखाने में है जहाँ बहुत सारी छपाई हुई थी। और इसलिए यह एक बहुत अच्छी बात है। यहाँ हार्वर्ड यार्ड के पश्चिमी भाग में मैथ्यूज हॉल पर एक पट्टिका है।

वह लोकतंत्र के भी हिमायती थे। और यह एक छोटा सा मामला है, जॉन विन्थ्रोप, 1634 में, उन्होंने एक भारतीय समूह के साथ पेक्वॉट युद्ध किया था, मुझे लगता है कि यह लगभग 1637 की बात है। और इसलिए जॉन विन्थ्रोप, आप जानते हैं, वह गवर्नर या जो भी हो, जैसा है।

उन्होंने मंत्रियों से इस तरह के दस्तावेज़ के लिए सहमति भी मांगी, जिसका प्रस्ताव वे भारतीयों के साथ शांति स्थापित करने के लिए कर रहे थे, ठीक है, भारतीयों और अन्य चीज़ों के बीच। और इलियट ने आपत्ति जताई। और उन्होंने कहा, मूल रूप से, एक मिनट रुकिए, आपने इन सभी मंत्रियों को यह निर्णय लेते हुए पाया है।

नहीं, नहीं, नहीं। निर्णय कौन लेता है? निर्णय लोग लेते हैं, मंत्री नहीं, कुलीन वर्ग नहीं। नहीं, निर्णय लोग लेते हैं।

और इसलिए, जॉन इलियट ने कहा, क्षमा करें, भाई, यह निर्णय लोगों को लेना चाहिए, न कि केवल मंत्रियों और अन्य लोगों को। और इसलिए, उन्होंने आपत्ति जताई। जॉन विन्थ्रोप ने फिर कुछ लोगों को नीचे भेजा, इस आदमी के साथ क्या हुआ? वह मेरी बात को झूठ बता रहा है।

मैं मंत्रियों से सलाह ले रहा हूँ। क्या यह अच्छी बात नहीं है जो मैंने की? खैर, और इलियट कह रहे हैं, नहीं, आपको आम जनता से सलाह लेनी होगी, लोकतंत्र जैसी चीज़। और इसलिए जॉन विन्थ्रोप ने इलियट के मामले में हस्तक्षेप किया, और इलियट ने माफ़ी मांगी।

इलियट का उसके प्रति बहुत दयालु भाव था। वह झगड़ा करने और, आप जानते हैं, दंगा-फसाद और इस तरह की चीज़ों में दिलचस्पी नहीं रखता था। और इसलिए उसने कहा, ठीक है, ठीक है।

आप जानते हैं, लेकिन उन्होंने खुद को और अन्य चीज़ों को व्यक्त किया। वह चर्च की राजनीति के बारे में बहुत अधिक जानते थे, जहाँ लोग चर्च के लिए निर्णय लेते हैं, और साथ ही वह सरकार के लिए भी महसूस करते थे। इससे हमें दो समस्याओं का सामना करना पड़ता है जो जॉन इलियट को थीं।

इनमें से एक था एन हचिंसन का मुकदमा। यह 1637-38 के आसपास की बात है, पेक्वॉट युद्ध के ठीक बाद। मूल रूप से, इलियट एन हचिंसन मामले में शामिल थे।

राज्यपाल आस्था के रक्षक थे। चर्च और राज्य के बीच कोई अलगाव नहीं था। ठीक है।

और अब मुझे पता है कि चर्च और राज्य के बीच बहुत स्पष्ट अंतर है। उन दिनों, यह कुछ भी नहीं था। वे एक साथ थे।

मूलतः, विधर्म के अधिकांश मामलों को स्थानीय स्तर पर ही निपटाया जाता था। और ऐन जॉन कॉटन के चर्च, फर्स्ट चर्च ऑफ़ बोस्टन में जाती थी। ऐन हचिंसन जॉन कॉटन की बहुत बड़ी प्रशंसक थी और उसे बहुत पसंद करती थी, लेकिन उसे लगता था कि बाकी सभी लोग विधर्मी हैं।

इसलिए वह कैन को पालना शुरू करती है और फिर इंग्लैंड में दिलचस्पी लेने लगती है। इसलिए वह वहाँ आ जाती है। चर्च के पादरी वास्तव में जॉन विल्सन हैं, लेकिन जॉन कॉटन उनके साथ काम कर रहे थे। और वह बस्ती की महिलाओं को पढ़ाती थी।

और वह धर्मग्रंथों और अन्य चीज़ों के बारे में बहुत जानकार थी। और वह शहर में चर्चा का विषय बन गई क्योंकि उसके, और मुझे लगता है, 15 बच्चे थे, जो कि आश्चर्यजनक बात थी। उसे बाइबल का ज्ञान था।

उन्होंने मूल रूप से न्यू इंग्लैंड के सभी मंत्रियों पर आरोप लगाया कि वे उद्धरण, कार्यों की वाचा, उद्धरण का अंत, या बाहरी धर्म की शिक्षा देते हैं, न कि उद्धरण के विपरीत, अनुग्रह की वाचा की। तो, कार्यों की वाचा बनाम बाहरी बनाम अनुग्रह की वाचा, आंतरिक प्रकार की चीज़ें, और आंतरिक धर्म। और वे तब चर्चा में आ गए।

और फिर उसने मूल रूप से उन शब्दों का इस्तेमाल जॉन कॉटन और उसके बहनोई जॉन व्हीलराइट को छोड़कर सभी मंत्रियों की निंदा करने के लिए किया, जिनके पास यह उद्धरण था, आत्मा की मुहर। तो, आप देख सकते हैं कि यह कहाँ जा रहा है। आत्मा की मुहर जॉन कॉटन और जॉन व्हीलराइट पर है, लेकिन बाकी सभी अच्छे नहीं हैं।

जॉन विन्थ्रोप, जो गवर्नर या जो भी था, ऑर्थोडॉक्सी पार्टी का पक्षधर था। और जॉन विन्थ्रोप एक ऐसा आदमी था जिसका शहर पहाड़ी पर था। क्या आपको वह याद है? और आज भी, बीकन हिल और राज्य भवन।

1637 में, उसे राजद्रोह का दोषी पाया गया। थॉमस वेल्ड, मंत्री, रॉक्सबरी के प्रधान मंत्री, जहाँ जॉन इलियट थे, वेल्ड ने वास्तव में उसकी निंदा की। और ऐसा लगता है कि उसकी निंदा बहुत ज़्यादा मज़बूत थी।

जॉन इलियट दयालु थे, हालाँकि उन्हें उनकी शिक्षा में भी समस्याएँ नज़र आईं। उन्होंने कोशिश की; वह समुदाय की शांति की सेवा करने की कोशिश कर रही थीं। आप कल्पना कर सकते हैं कि यह समुदाय सात साल पुराना है।

वे जंगल का सामना कर रहे हैं। वे उन सभी चुनौतियों का सामना कर रहे हैं जो उन्हें सात साल की उम्र में झेलनी पड़ी थीं। और फिर वह आती है और कैन को इस तरह की चीज़ों के बीच बड़ा करती है।

और जॉन इलियट और 500 मंत्रियों ने उसकी निंदा की। उन्होंने उसे तुरंत बाहर नहीं निकाला। दरअसल, उसके कुछ दावे यह थे कि उसने तत्काल रहस्योद्घाटन में विश्वास किया था, कि जैसे परमेश्वर ने पुराने दिनों में अब्राहम से बात की थी, वैसे ही परमेश्वर ने उससे भी बात की।

और इसलिए, वह इस तरह से शुरू करती है। उसने शारीरिक पुनरुत्थान से इनकार करते हुए कहा कि आत्मा, शरीर नहीं, बल्कि आत्मा अमर है। मूल रूप से, सर्दी बहुत कठोर थी।

तो, उन्होंने ऐनी हचिंसन को निर्वासित कर दिया। उन्होंने उसे रॉक्सबरी में निर्वासित कर दिया। तो, यह इलियट है।

वह इलियट और वेल्ड के साथ है, और वे मूल रूप से उस सर्दी के लिए रॉक्सबरी में उसके साथ काम करते हैं। उनके पास दूसरा अभियोग है, जो अधिक हानिकारक है। वह झूठ बोलते हुए पकड़ी जाती है।

और यहां तक कि जॉन कॉटन, जिसका ऐनी हचिंसन ने वास्तव में समर्थन किया था, को भी एहसास हुआ कि वह झूठ बोल रही है। और इसलिए, वे मूल रूप से उसकी निंदा करते हैं। उसे अदालत द्वारा समुदाय से निर्वासित कर दिया गया है।

और फिर वह रोड आइलैंड जाती है। जब वह रोड आइलैंड जाती है, तो उसे रोजर विलियम्स की याद आती है, जो वहाँ जाने के लिए मशहूर थे, जहाँ उनके पति की मृत्यु 1642 में हुई थी। और फिर वह लॉन्ग आइलैंड जाती है।

और जब वह लॉन्ग आइलैंड पहुँचती है, तो उसे और उसके बच्चों को वहाँ मार दिया जाता है। इसलिए, यह उसके लिए एक दुखद अंत है। एलियट की उम्र लगभग 36 साल है।

वह पहली पीढ़ी में हैं। रॉक्सबरी में थॉमस वेल्ड के साथ पाँच साल के जुड़ाव के बाद, यह कहना बहुत आसान है कि उन्होंने बड़े आदमी को अपना शिक्षक बनने की अनुमति दी थी। वेल्ड इलियट से लगभग नौ साल बड़े थे।

और इसलिए, कुछ लोग सोचते हैं कि थॉमस वेल्ड के मन में ऐनी हचिंसन के प्रति बहुत ज़्यादा कटुता थी। और इसलिए, उन्होंने इलियट को प्रभावित किया। शायद ऐसा नहीं हुआ।

एलियट उससे भी ज़्यादा मज़बूत थे। और एलियट ने इस दुखद कहानी में खुद को रूढ़िवाद के संरक्षक के रूप में स्थापित किया। इसलिए, वह रूढ़िवाद के पक्ष में जाता है।

यह जॉन इलियट के बारे में लोगों द्वारा बताई गई समस्याओं में से एक है, जो उन्होंने अपने युवा वर्षों में किया था। दूसरी समस्या यह है कि वह थोड़े उग्र स्वभाव के हैं। उन्होंने यह किताब लिखी है, और उन्होंने कहा कि उनके पास 50, 60, 70 पेज के ट्रेक हैं।

इसे द क्रिश्चियन कॉमनवेल्थ कहा जाता है। वैसे, ये सभी दस्तावेज मेरी वेबसाइट पर हैं। अगर आप मेरी वेबसाइट पर जाएँ, हिस्ट्री, न्यू इंग्लैंड हिस्ट्री पर जाएँ, तो आपको जॉन इलियट पर एक

पेज दिखाई देगा जहाँ मैंने दस्तावेज बनाए हैं, और मेरे पास वर्ड, पीडीएफ फॉर्म और HTML में सभी संसाधन हैं।

तो, आप उन्हें आसानी से डाउनलोड और संपादित कर सकते हैं या उन्हें किसी भी संदर्भ में उपयोग कर सकते हैं। वैसे, ये नोट्स, साथ ही वीडियो, चित्र और सामान जो मेरे पास पावरपॉइंट में हैं, वे पावरपॉइंट हैं जो बाइबिल ई-लर्निंग पर जॉन इलियट साइट पर भी होंगे।

यह मेरी साइट है, बाइबिल ई-लर्निंग। अगर आप बाइबल के बारे में सीखना चाहते हैं तो वहाँ बहुत सारे मुफ्त संसाधन हैं। यह जाने के लिए एक शानदार जगह है।

मैंने पूरे वेब से, वास्तव में, वेब से भी ज़्यादा, जॉन इलियट के बारे में जितने भी दस्तावेज़ मुझे मिल सके, उन्हें इकट्ठा किया। तो यह एक तरह की वन-स्टॉप शॉपिंग है। बस वहाँ जाएँ।

जॉन इलियट के बारे में जानने के लिए आपको जो कुछ भी जानना है, वह सब यहाँ है। लेकिन उन्होंने द क्रिश्चियन कॉमनवेल्थ नामक एक लंबी किताब लिखी थी। यह 1659 में इंग्लैंड में प्रकाशित हुई थी।

मूल रूप से, यह कहता है कि जॉन इलियट ने निर्गमन 18.25 का उपयोग किया। निर्गमन 18.25 में, जेथ्रो मूसा से मिलता है और कहता है, मूसा, मूसा, तुम खुद को मार रहे हो। मूसा न्याय करने की कोशिश कर रहा था, आप जानते हैं, वहाँ हज़ारों लोग हैं, और वह इन सभी लोगों के बीच निर्णय लेने की कोशिश कर रहा है। और जेथ्रो, उसका ससुर, उसकी पत्नी का सहारा, और जेथ्रो ससुर था, मिद्यान का पुजारी, बाहर आता है और कहता है, मूसा, मूसा, शांत हो जाओ, यार।

आपको जो करना है वह यह है कि दस के शासक हों, और वे निर्णय लें, दस के लिए छोटे निर्णय, पचास के शासक, सैकड़ों के शासक, हज़ारों के शासक। अगर उनके पास कोई कठिन समस्या है, तो उन्हें उसे आपके पास लाने दें। तो, दस दस के नेता का चुनाव करते हैं, पचास पचास के शासक का चुनाव करते हैं, सौ, सौ के शासक का, हज़ारों का, हज़ारों का शासक का।

और फिर, मूल रूप से, बड़ी चीज़ें मूसा के पास उससे आगे आती हैं। और इसलिए, इलियट ने जो किया वह यह था कि उसने कहा, अरे, यह सरकार चलाने का एक अच्छा तरीका है। समस्या यह है, और यह 1659 में इंग्लैंड में प्रकाशित हुआ, और राजा ने कहा, क्षमा करें, हम यहाँ इस तरह की चीज़ों पर वोट नहीं करते हैं।

ठीक है। और इसलिए, हमें इंग्लैंड में प्रबंधकों से वास्तविक, वास्तविक विरोध मिला। और ऐसा ही हुआ, इसलिए उन्होंने ऐसा किया। उन्होंने उनके मामले को इतनी बुरी तरह से दबाया कि इसे दबाने का आदेश दिया गया, और इसे रद्द कर दिया गया।

मुझे लगता है कि आप कह सकते हैं कि यह इलियट के पहले रद्द किए गए दस्तावेज़ों में से एक है। और इसलिए, उसे इसे वापस लेना पड़ा। इसलिए, उसने माफ़ी मांगी।

मेरा मतलब यह नहीं था, आप जानते हैं, मेरा मतलब इंग्लैंड में राजतंत्र और इस सब चीजों को खत्म करना नहीं था। इसलिए, उन्होंने मूल रूप से इसे खा लिया और कहा, ठीक है, मैं ऐसा नहीं करूँगा। हालाँकि, फिर भी, एलियट अभी भी उस सिद्धांत में विश्वास करते थे।

और जब वह उन 14 छोटे गांवों, भारतीय गांवों, प्रार्थना करने वाले भारतीय गांवों का निर्माण करता है, नादिक प्रमुख है, जब वह नादिक और इन अन्य का निर्माण करता है, तो वह इसे इस आधार पर करता है; मुझे लगता है कि उसने इसे चर्चों का समुदाय, चर्चों का समुदाय कहा है। और चर्चों के समुदाय में उसने जो प्रस्ताव रखा वह निर्गमन 18, 25, दस, पचास, सैकड़ों है, और मूल रूप से चर्चों के भीतर अब वही काम करता है, राजा के खिलाफ नहीं जा रहा है। तो वह एक तरह से, और वैसे, मुझे चर्चों का समुदाय कहना चाहिए, जिसे स्कैन करने में मुझे वास्तव में बहुत मुश्किल हुई क्योंकि यह मूल रूप से अमेरिका में पहली निजी तौर पर मुद्रित पुस्तक थी।

उनमें से लगभग कोई भी अस्तित्व में नहीं है। और एलियट ने इसे निजी तौर पर छापा। और वैसे भी, तो यह एक तरह की, मुझे नहीं पता, आश्चर्यजनक बात है, एलियट, उसने कैसे, कैसे काम किया।

तो, ठीक है। अब, अमेरिका में छपी पहली किताब, 1640 में, बे स्तोत्र पुस्तक थी। मुझे अमेरिका में छपी पहली किताब, बे स्तोत्र पुस्तक, 1640 के बारे में कुछ टिप्पणी करने दें।

कॉटन माथेर और उनकी *मैग्रेलिया*, तीन, अध्याय 12 टिप्पणियाँ और कविता की तरह। मुझे लगता है कि वह उनका मज़ाक उड़ा रहा है। आप रॉक्सबरी कवि अपराध और गुमशुदगी से दूर रहते हैं ताकि हमें एक बहुत अच्छी कविता दे सकें।

मुझे लगता है कि वह वेल्ड और एलियट का जिक्र कर रहे हैं, जो बे भजन पुस्तक में शामिल थे। और इसका मूल रूप से मीटर में अनुवाद किया गया था। इसलिए, हिब्रू बाइबिल के लोगों ने अंग्रेजी मीटर में अनुवाद किया।

यह आश्चर्यजनक है। और यह कठिन है। वे कहते हैं, और वेल्डन का जिक्र करते हुए एक अच्छी कविता भी।

और वह कहता है, और डोरचेस्टर के तुम, तुम्हारी कविताएँ लंबी हो जाती हैं, शायद रिचर्ड माथेर का संदर्भ देते हुए, लेकिन पाठ के अपने शब्दों के साथ, तुम उन्हें मजबूत करोगे। मुझे इसे पढ़ने दो क्योंकि इसमें वास्तव में थोड़ी कविता भी है। और डोरचेस्टर के तुम, तुम्हारी कविताएँ लंबी हो जाती हैं, लेकिन पाठ के अपने शब्दों के साथ, तुम उन्हें मजबूत करोगे।

और इसलिए कॉटन इलियट ने तुकबंदी वाली बात कही, मीटर और तुकबंदी इस बे स्तोत्र पुस्तक और इस तरह की चीजों में शामिल हो गई। इलियट ने अपने मनोरंजन के लिए तुकबंदी की। और ऐसा लगता है कि वह इस तरह से बहुत चतुर व्यक्ति थे।

वह वास्तव में अंग्रेजी और भारतीय संस्करणों में भी कुछ तुकबंदी करने जा रहा है। इसलिए, बोस्टन के मंत्री और मजिस्ट्रेट चाहते थे कि सब्बाथ पर भजनों का उनका अपना संस्करण गाया जाए। और इसलिए वे इस बे भजन पुस्तक पर वास्तव में बहुत गर्व महसूस करते थे।

और जैसे उन्हें बे स्तोत्र पुस्तक पर गर्व था, वैसे ही उन्हें इलियट पर भी गर्व है। थॉमस वेल्ड और रिचर्ड माथेर के साथ वह मुख्य अनुवादकों में से एक थे। इसमें कुछ अन्य लोग भी शामिल थे।

तो, वैसे, यह कैम्ब्रिज, मैसाचुसेट्स में छपा था। और प्यूरिटन लोगों को यह चीज़ बहुत पसंद थी। और वैसे, इलियट चाहते थे कि चर्च की सभाएँ, परिषदें और चर्च परिषदें हिब्रू में विचार-विमर्श करें।

क्या आप इसकी कल्पना कर सकते हैं? यह 1800 के दशक के अंत में ज़ायोनी आंदोलन से बहुत पहले की बात है और इज़राइल में, जहाँ उन्होंने 1948 और उसके बाद हिब्रू भाषा को फिर से जीवित किया। और आप आज इज़राइल जाकर हिब्रू बोलना सीख सकते हैं और ऐसी ही अन्य बातें भी। लेकिन यह 1600 के दशक की बात है।

वह चाहते थे कि चर्च परिषदें हिब्रू में चलाई जाएं। और वैसे भी, इसलिए उन्होंने हिब्रू के सार्वभौमिक उपयोग के लिए तर्क दिया। मेरा अनुमान है कि अगर ईश्वर हिब्रू बोलता है और ईश्वर स्वर्ग में है, तो आपको अब हिब्रू सीखना चाहिए।

तो, जब आप स्वर्ग में पहुँचते हैं, तो आपको वहाँ पहुँचने से पहले हिब्रू सीखने के लिए दो साल की अवधि नहीं लेनी पड़ती। यह मेरा मज़ाक था। यह उसका मज़ाक नहीं था।

लेकिन मैं हिब्रू में भी प्रशिक्षित हूँ और हिब्रू भाषा का आनंद लेता हूँ। इसलिए, मैं अन्य उद्देश्यों के लिए भी इलियट को पसंद करता हूँ। तो मैं आपको एक उदाहरण देता हूँ।

भजन 23, यह 1640 में है। और मैं चाहता हूँ कि आप इसकी थोड़ी सी तुकबंदी और मीटर देखें क्योंकि यह हर कोई जानता है। लेकिन भजन 23 इस तरह है।

प्रभु मेरे लिए एक चरवाहा है, इसलिए मुझे इसकी आवश्यकता नहीं है। वह कोमल घास की तहों में मुझे लेटने के लिए मजबूर करता है। और इसलिए, आप सुन सकते हैं कि मैं, इसलिए मुझे इसकी आवश्यकता नहीं है, मुझे लेटने के लिए मजबूर करता है। इसलिए आप मीटर की धड़कन सुन सकते हैं और तुकबंदी को समझ सकते हैं।

और इसलिए यह अनुवाद करने का एक दिलचस्प तरीका है, लेकिन यह अनुवाद करने का एक कठिन तरीका है। लेकिन इन लोगों को भाषा पर पकड़ थी। यह अंग्रेजी भाषा है।

यह आश्चर्यजनक है। इसे सिर्फ पढ़ने के लिए नहीं, बल्कि सुनने के लिए डिज़ाइन किया गया था। इसे सिर्फ पढ़ने के लिए नहीं, बल्कि सुनने के लिए डिज़ाइन किया गया था।

बे स्तोत्र पुस्तक एक ऐसी घटना थी जिस पर उन्हें गर्व था, और इलियट को भी उस सम्मान का कुछ हिस्सा मिला। अब, मैं भारतीय मिशन की ओर रुख करना चाहता हूँ, जिसे मान्यता दी गई, समर्थन दिया गया और विरोध किया गया। ठीक है।

भारतीय मिशन को शुरू से ही मान्यता और समर्थन मिला। अमेरिका आने पर अंग्रेजों ने भारतीयों को किस तरह देखा? और वहाँ क्या था, वह कैसे हुआ? कॉनवर्स फ्रांसिस नामक व्यक्ति द्वारा भारतीयों का वर्णन इस प्रकार है, और यह पुस्तक काफी पहले की है। इसमें कहा गया है कि सभी असभ्य लोगों की तरह, वे किसी भी तरह के नियमित श्रम के प्रतिकूल थे।

उनका समय, यानी भारतीयों का समय, युद्ध, शिकार या मछली पकड़ने और आलस्य या नींद में व्यतीत होता था। अन्यत्र नशे, जुआ, बदला, उनके लिए बड़ी चीजें और पोव्विंग जैसी समस्याओं का उल्लेख किया गया है। फ्रांसिस कहते हैं, उद्धरण, एक पोव्वो, संक्षेप में, एक पुजारी, एक चिकित्सक और एक जादूगर था।

तो, एक पाउवाऊ एक तरह से भारतीय पुजारी की तरह था, और वे मंत्रोच्चार, नृत्य और इस तरह की सभी जंगली चीजें और चीजें करते थे। पाउवाऊ उसका मुखिया था। वह पुजारी था।

सैचेम प्रमुख थे। भारतीय प्रमुख को सैचेम कहा जाता था। और बाद में, इलियट के लिए समस्याएँ पैदा हो गईं क्योंकि जैसे-जैसे इलियट ने मसीह के सुसमाचार का प्रचार किया, पुजारी, पाउवाँ की शक्ति कम होती गई, और प्रमुखों की शक्ति भी कम होती गई।

और इसलिए, मुखिया शक्ति खो रहे थे, पुजारी शक्ति खो रहे थे, और अपनी शक्ति खोने के परिणामस्वरूप, वे अपने लोगों पर सुसमाचार का विरोध करने जा रहे थे क्योंकि जब सुसमाचार उनके लोगों के पास आता है, तो वे अपनी शक्ति खो देते हैं। और उन्हें भोजन और सभी सामान लाने वाले लोग नहीं मिलते, इसलिए उन्हें इतनी मेहनत नहीं करनी पड़ती। अब, अचानक, लोग कह रहे हैं, हम्म, हम अब ऐसा नहीं करने जा रहे हैं।

और इसलिए, पुजारियों के साचेम और पाउवाँ विरोध करेंगे या उनका विरोध किया जाएगा। उनमें से सभी नहीं, सभी नहीं, लेकिन उनमें से कुछ सत्ता संघर्ष की वजह से सुसमाचार के प्रसार का विरोध करेंगे। आप प्रेरितों के काम में भी यही बात देखते हैं, और जब पॉल इफिसस में आता है, और फिर मूल रूप से, चांदी के कारीगर अब आर्टेमिस में देवता नहीं बना सकते।

और इसलिए वे कहते हैं, आप जानते हैं, हम पॉल के खिलाफ हैं, आप जानते हैं, इफिसस, आप जानते हैं, आर्टेमिस के लिए है, और वे इस पर एक बड़ा दंगा करते हैं। यहाँ भी ऐसी ही सत्ता संरचना की बात होने जा रही है, और आप इसे भारतीयों के भीतर देखने जा रहे हैं। चेचक।

भारतीयों को चेचक की बीमारी ने जकड़ लिया था। अंग्रेज़ लगभग 1620 में प्लायमाउथ रॉक, विलियम ब्रैडफोर्ड पहुँचे। लेकिन उससे पहले, 1612 और 1613 में, चेचक की महामारी फैली थी, जिसमें बहुत से भारतीयों की मौत हो गई थी।

और इसलिए, भारतीय चेचक से तबाह हो गए थे। वैसे, यह गोरे लोगों के आने से पहले की बात है, गोरे लोगों के आने से पहले की। और इसलिए, उनकी संख्या कम हो गई थी।

मैसाचुसेट्स सील, शुरुआती मैसाचुसेट्स सील, और मैं इसके ठीक बाद आपके लिए एक तस्वीर रखूंगा, वहाँ एक भारतीय खड़ा है और कह रहा है, और अगर आप उसके मुँह से निकलने वाले कैप्शन को पढ़ें, तो वह उसके सिर के ऊपर से वापस जाता है, वह कहता है, आओ और हमारी मदद करो। तो, एक भारतीय और मैसाचुसेट्स सील ने कहा, आओ और हमारी मदद करो। खैर, यह अधिनियमों के अध्याय 16, श्लोक नौ से एक उद्धरण है।

और मूल रूप से, यह पॉल को उद्धृत कर रहा है जब पॉल को मैसेडोनियन दर्शन मिल रहा था, आओ और हमारी मदद करो। और इसलिए मूल रूप से, इसका मतलब है कि सुसमाचार को यहाँ लाना। और इसलिए मुहर पर, प्रारंभिक मुहर पर, आपको यह भारतीय कहावत मिलती है, आओ और हमारी मदद करो।

यहाँ सुसमाचार का प्रसार किया जा रहा है। और इसलिए यह एक अद्भुत मुहर है जो प्रारंभिक भारतीयों और अन्य चीजों के प्रति दृष्टिकोण को दर्शाती है। प्लायमाउथ की परिषद को राजा का अनुदान।

यह मूल प्लायमाउथ है। यह मुख्य प्रभाव बताता है, जो मैं करता हूँ। यह एक उद्धरण है, उद्धरण, मुख्य प्रभाव, जो मैं इस क्रिया से चाह सकता हूँ और उम्मीद कर सकता हूँ, वह है इन भागों के लोगों का ईश्वर और ईसाई धर्म की सच्ची पूजा में रूपांतरण, उद्धरण समाप्त। इसलिए न केवल वे भागने की कोशिश कर रहे थे, बल्कि प्यूरिटन और तीर्थयात्री, विशेष रूप से तीर्थयात्री, धार्मिक स्वतंत्रता प्राप्त करने के लिए यहाँ आए थे।

और यहाँ आने के लिए उनका एक उद्देश्य यह भी था, लेकिन वे यहाँ मूल रूप से भारतीय लोगों तक सुसमाचार फैलाने के लिए काम करने के लिए कमीशन के तहत भी आए थे। और इसलिए राजा और राजा के अनुदान द्वारा कहा गया है, 16 फरवरी, 1629 को मैसाचुसेट्स के शुरुआती गवर्नर एंडिकॉट और गवर्नर की कंपनी के गवर्नर मैथ्यू क्रैडॉक को पत्र, जो कि 1629 की शुरुआत में था, ये शब्द, उद्धरण, हमें विश्वास है कि आप भारतीयों को सुसमाचार के ज्ञान में लाने के प्रयास में हमारे बागान के मुख्य उद्देश्य से बेखबर नहीं होंगे, उद्धरण समाप्त। अद्भुत।

तो इसका वह हिस्सा, अमेरिका में उनके आने का हिस्सा, मैं बस इतना ही कहना चाहता हूँ, ठीक है, आर्कबिशप लॉड और इस तरह की चीजों के उत्पीड़न से बचने के लिए था। तो, प्यूरिटन रास्ते में आए और फिर 1630 के दशक और अन्य। और फिर, विलियम ब्रैडफोर्ड 1620 में तीर्थयात्रियों के साथ आए।

वे धार्मिक उत्पीड़न से दूर होने की कोशिश कर रहे थे, लेकिन भारतीयों तक सुसमाचार का प्रसार भी करना चाहते थे। और फिर एक और कदम; मुझे यहाँ अपने नोट्स नहीं मिले हैं, लेकिन यह एक दिलचस्प कदम है। इलियट भारतीयों के धर्मांतरण में उन्हें बहुत शामिल करने की कोशिश करेंगे, लेकिन फिर वे ऐसी चीजें भी लिखेंगे जो इंग्लैंड में वापस जाएँगी।

और वे अमेरिका में उम्मीद कर रहे हैं कि जब वे धर्मांतरण और स्वीकारोक्ति देखेंगे, जिसे वे इन भारतीयों की स्वीकारोक्ति कहते हैं, इन भारतीयों की स्वीकारोक्ति इंग्लैंड में चर्च को शुद्ध करने और पुनर्जीवित करने में मदद कर सकती है। इसलिए, न केवल धार्मिक स्वतंत्रता के लिए अमेरिका की ओर पलायन हुआ, बल्कि सुसमाचार के लिए भारतीयों का पीछा भी हुआ, बल्कि इंग्लैंड में सुसमाचार को वापस लाना भी उनकी इच्छा का एक हिस्सा था, और उन्हें उम्मीद थी कि ये भारतीय स्वीकारोक्ति इंग्लैंड में लोगों को प्रभावित करेगी। तो, यह एक तरह से दिलचस्प है, एक भारतीयों के साथ, दो, और फिर तीन के साथ वापस, ये सभी शामिल थे।

वैसे, भारतीयों को इज़राइल की 10 खोई हुई जनजातियाँ माना जाता था। और इसलिए, यह थॉमस थोरोगुड, जिसके बारे में मैंने पहले बात की है, वह वही है जिसने इलियट को भारतीयों का प्रेषित बताया, मूल रूप से तर्क देता है कि अमेरिका में यहूदी, अमेरिकियों की संभावना यहूदी हैं। दूसरे शब्दों में, ये भारतीय वास्तव में यहूदी मूल के हैं।

और एलियट ने इस पर विचार-विमर्श किया, बेशक, वह, आप जानते हैं, हिब्रू हिब्रू है। और इसलिए, उसने धर्म परिवर्तन किया, वह उससे सहमत था। और वैसे, यह एम्स्टर्डम में रब्बी बेन इज़राइल द्वारा भी आयोजित किया गया था।

तो, यह सिर्फ़ ईसाई लोगों द्वारा बनाई गई बातें नहीं थीं। इज़राइल में एम्स्टर्डम में एक रब्बी है जो यही बात कहता था। अब, उन्होंने भारतीयों से ऐसा क्यों कहा? खैर, भारतीयों ने उनके सिर का अभिषेक किया।

ठीक है, उन्होंने अपने सिर का अभिषेक किया, पुराने नियम की तरह। उन्होंने अजनबियों के पैर धोए, बिल्कुल वैसा ही जैसा बाइबल में है; यीशु लोगों के पैर धोते हैं। वे नाचने में आनंद लेते थे।

आपको डेविड याद होगा और दूसरा सैमुअल सिक्स प्रभु के सामने अपनी पूरी ताकत और सामान के साथ नाच रहा था। वे दृष्टांतों में खुद को व्यक्त करते हैं, और उनके पास दृष्टांत और कहानियाँ हैं जो वे बताते हैं। और इसी तरह इलियट दृष्टांत-प्रकार की चीजों का उपयोग करके भारतीयों से संवाद करने जा रहा है।

माना जाता है कि उन्होंने हालेलुयाह शब्द कहा था। और इसलिए जाहिर है, हालेलुयाह आया, और मुझे यकीन नहीं है कि इसका अनुवाद कैसे किया जाता है, लेकिन उन्होंने अंग्रेजी और भारतीय भाषाओं में हालेलुयाह शब्द सुना। और उन्होंने कहा, हम्म, यह हिब्रू और अन्य चीजों के साथ एक लिंक दिखाता है।

खतना: कुछ भारतीयों का खतना किया जाता है, और वे कहते हैं कि खतना यहूदी धर्म है और इसी तरह की अन्य बातें। और वैसे, जाहिर है, भारतीयों को सूअर का मांस पसंद नहीं था। और इसलिए वे कहते हैं, हम्म, यह भी यहूदी धर्म है।

तुम्हें पता है, यह कोषेर नहीं है। मैं आज सूअर और अन्य चीजें नहीं खा सकता। तो, सूअर और सूअर का मांस।

तो मैं यह नहीं कह रहा कि यह सच था, लेकिन मुझे लगता है कि इलियट ने इसे वहां गलत समझा, लेकिन यही वह तरीका था जिससे उन्होंने भारतीयों को इज़राइल की 10 खोई हुई जनजातियों के रूप में सोचा था। इसलिए, उन्होंने उन्हें यीशु मसीह और अन्य चीजों में परिवर्तित करने पर काम किया। तो, मसीह के सुसमाचार में।

अब, भारतीयों के साथ काम करने वाले कुछ अन्य लोग भी केवल इलियट ही नहीं थे जो भारतीयों के साथ काम कर रहे थे; वे यह दिखाने की कोशिश कर रहे थे कि भारतीयों तक सुसमाचार फैलाने में कई लोग शामिल थे। उनमें से एक रोजर विलियम्स नाम का व्यक्ति था। और वह मूल रूप से प्लायमाउथ में है।

फिर, वह रोड आइलैंड के एक प्रांत में पहुँच गया। उसने उन्हें उनकी अपनी भाषा में उपदेश दिया। उसने उद्धरण नामक इस चीज़ को विकसित किया, जो अमेरिका की भारतीय भाषा की कुंजी है, और 1643 में उद्धरण।

अब, इलियट को भारतीय भाषा बोलने में सक्षम होने में तीन साल लग गए हैं। इसलिए, विलियम्स इलियट से बस थोड़ा आगे हैं। लेकिन वह इलियट जितना व्यापक नहीं है।

लेकिन उन्होंने इसे कुंजी बना दिया, या यह मूल रूप से एक शब्दकोश है, भारतीय शब्दों और उनके उपयोग के तरीकों का एक शब्दकोश। रोजर विलियम्स ने ऐसा किया। उन्हें 1636 में निर्वासित कर दिया गया था।

लेकिन उन्हें भारतीयों की बोलियों की अच्छी समझ थी, रोजर विलियम्स। एक व्यक्ति जो अविश्वसनीय है, और मुझे उसके बारे में और अधिक अध्ययन करने की आवश्यकता है, और मुझे वास्तव में हमारे पुस्तकालय में एक पुस्तक ऋण के लिए मिल रही है, वह थॉमस मेहेव नाम का एक व्यक्ति था। थॉमस मेहेव मार्था के वाइनयार्ड में था।

वह इलियट से भी थोड़ा पहले का है। तो, हम आज 16वीं और 1640 के दशक की शुरुआत की बात कर रहे हैं और आज मैसाचुसेट्स के तट से कुछ दूर मार्था वाइनयार्ड में कुछ ऐसा ही है। और हाँ, हमने वास्तव में इलियट से भी ज़्यादा भारतीय भाषा में प्रचार किया।

तो, यह है, हम अब 1640 के दशक में मार्था के वाइनयार्ड पर हैं। मेयू के लाभ, मेयू के दो लाभ थे। मेयू के बच्चों ने, उसके बाद, तीन पीढ़ियों तक, तीन पीढ़ियों तक भारतीयों के साथ अपना काम जारी रखा, इसलिए, आप जानते हैं, 1640 के दशक से लेकर 18 तक, मुझे लगता है कि यह 1820 है।

मैं अब पागल हो रहा हूँ। नहीं, 1806। 1640 से 1806 तक, उनके मेहेव की पीढ़ियों ने मूल रूप से भारतीयों और अन्य लोगों के साथ काम किया।

तो, उन्होंने मार्था के वाइनयार्ड पर भारतीयों के साथ 100 से ज़्यादा, 150 साल तक काम किया। तो, थॉमस मेयू एक अद्भुत व्यक्ति हैं। वह और इलियट कुछ चीज़ों पर पत्राचार और बातचीत भी करते थे।

मार्था के वाइनयार्ड में, मेह्यू के इलियट से ज़्यादा सफल होने का दूसरा कारण यह था कि जब हम 1675 में किंग फिलिप के युद्ध के बारे में बात करने जा रहे हैं, जब किंग फिलिप के युद्ध ने मैसाचुसेट्स को तबाह कर दिया था, और भारतीय लोग दोनों तरफ़ से मारे जा रहे थे। और यह वास्तव में बहुत ही भयानक समय था। हम इसे बाद में दिखाएंगे।

मार्था के वाइनयार्ड में बसने वालों और भारतीयों के बीच संबंधों को कुछ हद तक नजरअंदाज कर दिया गया। इसलिए उन्हें किंग फिलिप के युद्ध के नतीजे कभी नहीं मिले क्योंकि वे मार्था के वाइनयार्ड में थे और इसलिए उन्हें वह झटका नहीं लगा जिसका सामना एलियट को अपने जीवन में बाद में करना पड़ा। इसलिए, थॉमस मेयू, एक अद्भुत व्यक्ति, और मेयू की पीढ़ियों ने मार्था के वाइनयार्ड में भारतीयों तक सुसमाचार फैलाने में मदद की।

वेबसाइट पर थॉमस मेयू की जीवनी देखें, जो एलियट के एक तरह के दोस्त भी हैं। एलियट के कुछ और दोस्त भी थे, इसलिए मैं इस समय उनके बारे में संक्षेप में बताऊंगा। रिचर्ड गूकिन इसके प्रमुख निकले। उन्हें भारतीय गांवों, ईसाई प्रार्थना करने वाले भारतीय गांवों का प्रभारी बनाया गया था, और वे अभी भी सरकारी पक्ष से मॉनिटर थे, लेकिन वे एलियट के अच्छे दोस्त थे।

तो, रिचर्ड गूकिन और इलियट मूल रूप से कलीग थे। थॉमस शेफर्ड भी तब सामने आए जब इलियट ने भारतीयों को उनकी अपनी भाषा में उपदेश देना शुरू किया। कैम्ब्रिज से थॉमस शेफर्ड भी वहाँ थे, और इलियट इन अन्य लोगों की तुलना में कहीं ज़्यादा व्यवस्थित थे जिन्होंने छिटपुट काम किया था। इलियट कहीं ज़्यादा व्यवस्थित थे।

एडवर्ड विसलो इलियट के दूसरे दोस्त थे। एडवर्ड विसलो इंग्लैंड में थे, और इसलिए जो हुआ वह यह था कि इलियट इंग्लैंड में सामग्री भेजते थे, और एडवर्ड विसलो उसका प्रचार करते थे, उसे इंग्लैंड में प्रकाशित करते थे, और इंग्लैंड में उसका प्रसार करते थे, और फिर लोग इलियट के काम का समर्थन करते थे, और इस तरह उन्होंने मूल रूप से अपनी बाइबल छपवाई। इंग्लैंड के लोगों ने समर्थन किया, और उन्होंने इस बाइबल को छपवाने के लिए वास्तव में एक पूरी प्रेस और एक प्रिंटर भेजा।

तीन साल तक, उन्होंने बाइबल छापने के लिए इंग्लैंड से एक प्रिंटर को अनुबंधित किया। इसलिए, एडवर्ड विसलो, इलियट की सामग्री को लेने और इसे इंग्लैंड में उपलब्ध कराने में एक प्रमुख व्यक्ति थे ताकि इंग्लैंड के लोग भारतीय स्कूलों के प्रधानाध्यापकों का समर्थन कर सकें, इंग्लैंड से समर्थन प्राप्त होगा, और एडवर्ड विसलो मर चुका था। रिचर्ड बॉयल एक और व्यक्ति थे जो सुसमाचार के प्रचार के लिए एक सोसाइटी थी या ऐसा कुछ था, और रिचर्ड बॉयल एक तरह के दार्शनिक थे, एक अमीर व्यक्ति जो उससे ऊपर थे, और उन्होंने वास्तव में इस फंडिंग को प्रेरित किया जो इलियट की मदद करेगा।

और फिर अंत में रिचर्ड बैक्सटर नाम का एक व्यक्ति था, जो एक प्रारंभिक प्यूरिटन था, जो एक प्यूरिटन था रिचर्ड बैक्सटर और बैक्सटर और एलियट ने एक दूसरे को पत्र लिखे। वे आध्यात्मिक आत्मीय साथी की तरह थे, और एलियट बैक्सटर को कुछ बातें बताते थे और वास्तव में बैक्सटर के कुछ कार्यों का अल्गोंकिन भाषा में अनुवाद करते थे। इसलिए बैक्सटर एलियट को पत्र लिखते

थे, और रिचर्ड बैक्सटर और जॉन एलियट के बीच वास्तव में एक तरह की आत्मीयता थी, और हमें उनके कुछ पत्र-व्यवहार और चीजें मिली हैं।

इंग्लैंड में पाँच भारतीय समूह हैं, और मुझे नहीं लगता कि मैं अभी उनके बारे में बात करना चाहूँगा, लेकिन यहाँ जो देखा गया है और मैं कुछ डेटा का उपयोग कर रहा हूँ जो दिखाता है और मुझे जनसंख्या में कमी दिखाने के लिए बस थोड़ा सा करने दें। 1637 या उससे पहले के युद्ध से पहले हमने जिन पेक्टॉट्स के बारे में बात की थी, उनके पास 4,000 योद्धा थे, लेकिन 1674 में, उनके पास केवल 300 थे। इसलिए, इनमें से कई जनजातियों में, न्यू इंग्लैंड के इस क्षेत्र में पाँच आदिवासी समूह थे, और उनमें से लगभग सभी ने अपने योद्धाओं और अपने लोगों की संख्या में 90 प्रतिशत की कमी देखी, और इसलिए आप जानते हैं कि युद्धों और फिर महामारी और इस तरह की चीजों के बीच मूल रूप से कुछ बुरा हो रहा था।

भारतीयों की आबादी में भारी कमी आई थी। अब, मैसाचुसेट्स अल्बोर्किन जनजाति की कई बोलियाँ थीं। वैम्पानोआग लोग ही वे लोग हैं जिन्हें इलियट अपने अनुवाद के लिए लक्षित करने जा रहे हैं।

हालाँकि, इन प्रार्थना करने वाले भारतीयों के लिए बसने वालों की ओर से प्रतिरोध है। किसानों के साथ टकराव हुआ। मूल रूप से, आपके पास जो था वह इस बात का टकराव था कि आप भूमि को कैसे देखते हैं।

इंग्लैंड से बसने वाले आए, और वे भूमि पर बसना चाहते थे, बाड़ लगाना चाहते थे, और सड़कों और संपत्ति के अधिकार और अन्य चीजों के साथ गाँव और शहर बनाना चाहते थे। लोगों ने बगीचों और फसलों के चारों ओर बाड़ लगाई और बगीचे, फसलें, बाड़, गाँव, इस तरह की चीजें चाहते थे, जबकि भारतीय एक निश्चित अर्थ में भूमि से बहुत गहरे तरीके से जुड़े हुए थे, लेकिन उनके लिए, कोई बाड़ नहीं थी, कोई सीमा नहीं थी, भूमि केवल उनकी थी और इस तरह की चीजें, और उन्हें लगा कि वे शिकारी थे, वे मछुआरे थे और मूल रूप से वे घूमते थे हाँ वे घूमते थे जबकि ये अन्य लोग बसने वाले थे और इसलिए एक संघर्ष था। वैसे, मिस्र में भी यही हुआ। मेरा मतलब है, आप जानते हैं कि मूसा कहता है, अरे, तुम लोग अपनी भेड़ें और सामान यहाँ नीचे लाओ क्योंकि यह जोसेफ है, आप जानते हैं, फादर जैकब नीचे आ रहे हैं।

वह कहता है, यार, तुम नील नदी के किनारे नहीं बस सकते। नील नदी ही वह जगह है जहाँ सारी फसलें होती हैं। तुम्हारे मवेशी सारा खाना खा जाएँगे।

वे वास्तव में आपसे नाराज होंगे। आप गोशेन की भूमि में बस जाते हैं। गोशेन की भूमि में, आप अपने झुंडों को वहाँ रख सकते हैं क्योंकि झुंड खेती के साथ नहीं मिलते हैं, और इसलिए आपको यहाँ भी वही चीजें देखने को मिलती हैं जहाँ भारतीय घूमने, शिकार करने और मछली पकड़ने के आदी हैं, जहाँ वे चाहते हैं और अब आप देख रहे हैं कि बसने वाले लोग बाड़ लगाने और इस तरह की चीजें करने की कोशिश कर रहे हैं, इसलिए बसने वालों की तरफ से प्रतिरोध है क्योंकि बसने वाले कहते हैं कि एक मिनट रुको हमने उन बाड़ों को बनाया है, और भारतीय बस बाड़ को फांद कर अपना शिकार या कुछ भी करते हैं और इसलिए बसने वाले भारतीयों के विरोध में

थे और भारतीयों को यह पसंद नहीं था कि वे इन बस्तियों और चीजों के साथ पिंजरे में बंद हो जाएं और इसलिए जैसा कि हमने पहले उल्लेख किया है, सत्यम की तरफ से प्रतिरोध था।

सत्यम मुखिया थे, और पावो पुजारी थे, और फिर उन लोगों ने सत्ता खोना शुरू कर दिया। मैंने जो सत्यम पढ़ा, उसमें से एक ने वास्तव में उसे यह कहते हुए वर्णित किया है कि यार, अब मेरे लिए भोजन कौन लाएगा? तुम लोग ही हो। मैं मुखिया हूँ। तुम मुझे लाओ। तुम जानते हो, तुम जो भी कर या जो कुछ भी था, उसे तुम सत्यम, मुखिया को देते हो, इसलिए मुखिया को अपना सारा सामान उसके पास लाया जाता है। अब वे ईसाई बन गए हैं और इस तरह की चीजें लोग बस गए हैं और लोग जमीन पर बस गए हैं वे अपनी खेती कर रहे हैं, और वे अब इसे मुखिया के पास नहीं ला रहे हैं, और इसलिए मुखिया, सत्यम और पावो, पुजारी अपने नृत्य और अपने मंत्र और विभिन्न चीजों को फिर से कर रहे हैं, वे फिर से सत्ता खो रहे हैं, और इसलिए वे बहुत परेशान होने वाले हैं और इसलिए वे इस तरह के समझौते का विरोध करना शुरू कर देते हैं।

अब, एली भाषा कैसे सीखेगी? भारतीय भाषा, और फिर, मैं ग्रीक, हिब्रू और लैटिन को कैसे बोलना चाहिए, इस बारे में गड़बड़ कर चुका हूँ। दरअसल, मुझे उगारिटिक और बेबीलोनियन, या जिसे वे अकाडियन कहते हैं, पर एक कोर्स करना था, और वे कुछ हद तक कठिन भाषाएँ हैं। मैं आपको बस यह बताना चाहता हूँ कि मैंने भारतीय भाषा को देखा है।

वे कुछ भी नहीं हैं, और वे अलगोंकिन भाषा की तुलना में कुछ भी नहीं हैं। यह वास्तव में कठिन है, और यह मेरे लिए आश्चर्यजनक है कि एली यह सब समझ सकती है। यह वास्तव में एक कठिन भाषा है, यहां तक कि पुरानी बेबीलोनियन या एकेडियन भी। आपके पास, आपके पास, आपके पास ऐसा साहित्य है जिसके साथ आप काम कर सकते हैं।

उनके पास कोई लिखित साहित्य नहीं था जिसके साथ उन्हें काम करना था। यह सब सिर्फ मौखिक सामग्री थी जिसे उन्हें बनाना था। उन्हें वास्तव में अपनी खुद की वर्णमाला विकसित करनी थी ताकि वे उन लोगों के मुंह से सुनी गई आवाजों का वर्णन कर सकें।

काकानो नाम का एक आदमी था, काकानो, और यह आदमी मयूर युद्ध में, मूल रूप से, उसे बंदी के रूप में लिया गया था, और इसलिए डोरचेस्टर में एक आदमी था, जो रॉक्सबरी के ठीक बगल में है, जिसने इस आदमी को एक तरह के नौकर-दास के रूप में रखा था। वह युद्ध में पकड़ा गया था, और वह मूल रूप से एक घरेलू नौकर था।

खैर, इलियट ने यह देखा, और उसने कहा, अरे, मैं उसे ले जाऊंगा, और इसलिए मूल रूप से, इलियट उसे एक घरेलू नौकर के रूप में ले जाता है। वह इलियट के साथ रहता है, और उसका लक्ष्य तब इलियट को अलगोंकिन, या अलगोंकिन की स्वेम्पिंग बोली बोलना सिखाना है। इसलिए वह जानता था कि काकानो अंग्रेजी और अलगोंकिन दोनों जानता है, इसलिए वह अनुवाद की समस्या में इलियट की मदद करने में सक्षम था और इलियट को इस भारतीय भाषा में बोलना सीखने और सिखाने में सक्षम था।

वह एक बहुत ही महत्वपूर्ण व्यक्ति थे जिन्होंने इलियट को ऊर्जा देने में मदद की और उन्हें वह विशेषज्ञता दी जिसकी उन्हें इन लोगों से बात करने के लिए जरूरत थी। अब, रॉबर्ट फ्रॉस्ट, वैसे,

कहते हैं कि कविता वह है जो अनुवाद में गायब हो जाती है, और मैंने हिब्रू के अंग्रेजी में जाने की इस समस्या पर काम किया है, और मुझे इसे फिर से पढ़ने दें। कविता वह है जो अनुवाद में गायब हो जाती है।

पुराने नियम का एक तिहाई हिस्सा कविता होगा, और यह अनुवाद में गायब हो जाएगा, और वैसे, अंग्रेजी में भी, और मैंने इस पर वर्षों तक काम किया है। मैं नहीं कर सकता; यह कुछ ऐसा है जो मेरे लिए जानना असंभव है कि हिब्रू कविता का अंग्रेजी कविता में अनुवाद कैसे किया जाए। मैं ऐसा नहीं कर सकता, और मैंने इस पर वर्षों तक काम किया है, और इसलिए वह कहते हैं कि यह खो गया है।

एलियट, 1663 में, अल्गोंकिन में एक बाइबिल प्रकाशित करने जा रहे हैं। यह पहली पुस्तक होगी, पहली बाइबिल, क्षमा करें, 1663 में अमेरिका में छपी पहली बाइबिल। एलियट कहते हैं, और फिर बाद में, कुछ साल बाद, 1666 में, उन्होंने एक भारतीय व्याकरण लिखा, जो अब तक लिखा गया पहला था, जो उनके दिमाग से बनाया गया था, और एलियट ने कहा, उद्धरण, हमें चुपचाप बैठकर चमत्कारों की तलाश नहीं करनी चाहिए।

हमें चुपचाप बैठकर चमत्कारों की उम्मीद नहीं करनी चाहिए। लगातार काम करते रहो, और प्रभु तुम्हारे साथ रहेगा। मसीह यीशु में विश्वास के माध्यम से प्रार्थना और दर्द कुछ भी कर सकता है।

जॉन एलियट कहते हैं, आप अविश्वसनीय सपने के बिना अविश्वसनीय चीजें नहीं कर सकते। उन्होंने एक अविश्वसनीय सपना देखा था, और अब हम अगले सत्र में एक दूसरे को देखने जा रहे हैं। हम यहीं समाप्त करने जा रहे हैं। अगले सत्र में, हम एलियट को ले जाएंगे। हम उन्हें 1646 में वाबोन के विगवाम में देखेंगे, जब उन्होंने इन 14, या इन 14 प्रार्थना करने वाले भारतीय गाँवों का निर्माण किया था, हम उनके प्रमुख कार्यों को वाबोन के विगवाम और इन 14 बसे हुए गाँवों के बीच देखेंगे, और कैसे उनके जीवन का वह दौर मूल रूप से 1646 से 1675 तक किंग फिलिप के युद्ध के साथ होता है, जो इसे समाप्त करने जा रहा है, और यह 1675 में बसने वालों और भारतीयों के बीच एक विनाशकारी संबंध होने जा रहा है, और यह इन प्रार्थना करने वाले भारतीयों को बहुत प्रभावित करने वाला है।

तो, अगली बार, सत्र संख्या दो में, हम वाबोन के विगवाम से नैटिक और 14 प्रार्थना करने वाले भारतीय गाँवों में भारतीयों के साथ उनके काम को आगे बढ़ाएंगे। सुनने के लिए धन्यवाद। मुझे उम्मीद है कि आप जॉन एलियट की कहानी और यीशु मसीह के सुसमाचार को फैलाने के लिए इन भारतीयों के साथ उनके प्यार, जुनून और दोस्ती को सुनकर प्रेरित होंगे, और मुझे उम्मीद है कि इन वीडियो के माध्यम से यह बात आप तक पहुंचेगी।

देखने के लिए धन्यवाद, और हम अगले सत्र में आपसे मिलेंगे। धन्यवाद।

यह डॉ. टेड हिल्डेब्रांट द्वारा जॉन एलियट, 1604-1690, भारतीयों के प्रेषित पर उनके शिक्षण में है। यह सत्र संख्या एक है, एलियट का महत्व, अंग्रेजी जड़ें, बोस्टन में रॉक्सबरी के पहले चर्च के

मंत्री।